अध्याय–2

नक्सलवाद

नक्सलवाद 16–103

(अ) उद्‌भव

1. उद्‌भव - परिचय
2. उद्‌भव - एक सफर
3. माओवाद बनाम नक्सलवाद
4. नक्सलवाद का जनक - चारू मजूमदार

   (जीवन परिचय एवं नक्सल उद्‌भव से संबंधित तथ्य)
5. बस्तर महाराजा - प्रवीर चंद भंजदेव
6. छत्तीसगढ़ में नक्सल उद्‌भव

(ब) विकास

1. इंडियन पॉलिटिकल पार्टी
2. Organisation Hierarchy -Communist Party of India Moist.
3. विकास क्रम - वर्षानुसार
4. गुरिल्ला युद्धकर्म - एक संक्षिप्त परिचय
5. विभिन्न संगठन
6. माओवादी गतिविधियों के विकास का सारांश
   - प्रथम चरण (1967 से 1980 तक)
   - द्वितीय चरण (1980 से 2004 तक)
   - तृतीय चरण (2004 से जारी)
7. माओवादियों के लक्ष्य
8. कुछ प्रमुख नक्सली नेता

(स) विस्तार

1. भारत के नक्शे में नक्सल प्रभावित राज्य।
2. नक्सल प्रसार
3. विस्तार- एक परिचय
4. नक्सल प्रभावित राज्यों की सूची।
5. नक्सल प्रभावित जिलों की सूची
6. विभिन्न वर्षों में विस्तार संबंधी आंकड़े
7. संगठित रंगदारी व्यवसाय
8. मजबूत होते नक्सली
9. हाइटेक बनता नक्सलवाद
10. भारत में नक्सली समर्थक/माओवादी समर्थक पड़ोसी राज्य
11. नक्सल विस्तार
12. भारत में रेड कॉरिडोर के विकास का विस्तार क्रम
    - पश्चिम बंगाल
    - केरल
    - आंध्रप्रदेश
    - उड़ीसा
    - महाराष्ट्र
    - बिहार
    - झारखंड
    - छत्तीसगढ़

(अ) उद्‌भव

उद्‌भव परिचय- 'नक्सल' शब्द की उत्पत्ति पं. बंगाल के एक छोटे से गांव नक्सलबाड़ी से हुई तथा बंगाली भाषा में किसी व्यक्ति के घर या संपत्ति हेतु **बारी** शब्द का उपयोग किया जाता है।

नक्सलवाद कम्यूनिस्ट क्रांतिकारियों के उस अनौपचारिक आंदोलन का नाम है, जो भारतीय कम्यूनिस्ट आंदोलन के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता चारू मजूमदार और कानू सान्यल ने 1967 में सत्ता के खिलाफ एक सशस्त्र आंदोलन की शुरूवात की थी। चारू मजूमदार चीन के कम्यूनिस्ट नेता माओत्सेतुंग के बहुत बड़े प्रशंसकों में से एक थे।

माओ के विचारों के अनुसार **"क्रांति बंदूक की नली से जन्म लेती है"।** नक्सली नेता राज्य सत्ता को हथियाकर चीन के नमूने पर एक दलीय शासन पद्धति कायम करना चाहते थे जैसा कि कुछ समय बाद चारू मजूमदार ने उद्‌घाटित किया।

"Naxalbari represents the first even application of Mao Trsetung's thought on the soil of India. If was in Naxalbari that the peasantry for the first time launched their struggle for the seizure of power. For this reason Naxalbari sybolises for the seizure of power. For this reason Naxalbari symbolises the part of liberation for the exploited masses of the Indian people, thus ushering in a new era in the political history of India."

उद्‌भव – एक सफ़र :–

एक सशस्त्र क्रांति - चारू मजूमदार का मानना था कि भारतीय मज़दूरों और किसानों की दुर्दशा के लिये सरकारी नीतियाँ जिम्मेदार हैं। जिसकी वजह से उच्च वर्गों का शासन और कृषि तंत्र पर दबदबा हो गया है और यह सिर्फ **सशस्त्र क्रांति** से

खत्म किया जा सकता है। 1967 में नक्सल वादियों ने कम्यूनिस्ट क्रांतिकारियों की एक अखिल भारतीय समन्वय समिति बनाई और सरकार के ख़िलाफ भूमिगत होकर सशस्त्र लड़ाई छेड़ दी।

यद्यपि नक्सलवादी आंदोलन असफल रहा लेकिन नेताओं ने कई शिक्षाऐं लीं -

शिक्षाऐं :-

1. किसान भूमि के लिये नहीं वरन् राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के लिये लड़े।
2. किसानों के प्रति - क्रांतिकारी राजतंत्र के सशस्त्र आक्रमण के विरूद्ध सशस्त्र संघर्ष किया।
3. सशस्त्र आक्रमण के लिये उन्होंने अपने ही बनाए हथियारों का सहारा लिया। इन्हीं हथियारों की सहायता से उन्होंने पुलिस आग्नेयास्त्रों को छिना।
4. इन संघर्ष का विकास संसोधनवादियों के विरूद्ध लड़ने के लिये किया।
5. संसोधनवादियों के विरूद्ध यह संघर्ष केवल चेयरमेन माओ के विचारों के आधार पर ही लड़ा जा सकता है।

तभी चारू ने टिप्पणी की -

"Much forward by summing up the experience of the peasant revolutionary struggles in India."

&

"Fight Against the concrete manifestations of Revisionism in Liberation.

उपरोक्त टिप्पणी के आधार पर उन्होंने दावा किया कि संसोधनवादियों के विरूद्ध यह संघर्ष केवल चेयरमेन माओ के विचारों के आधार पर ही लड़ा जा सकता है।

नक्सलवादी क्रांति के परिणाम :–

1. ग्रामीण क्षेत्रों पर कब्जा करने के लिये भारी रक्तपात हुआ, देखते ही देखते कई जिलों में फैला गया।
2. तब के मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे ने कठोर पुलिस कार्यवाही की।
3. अनेक नक्सलवादी मारे गए, बचे हुए नक्सलवादी अन्य राज्यों में भाग गए विशेष रूप से बिहार में और नक्सलवादी आंदोलनों को चलाते रहे।
4. अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने हेतु अपनाए गए हिंसा, हत्या के कारणों से प्रशासन से टकराते रहे।
5. इन नक्सलवादी संगठनों में आपसी वर्चस्व के लिये भी संघर्ष होता रहा।
6. अनेक राज्यों में प्रतिबंध लगने के कारण ये भूमिगत रहे।

लेकिन नाम बदलकर अपनी गतिविधियों को अंजाम देते रहे।

आज का नक्सलवादी आंदोलन देशी तथा विदेशी समर्थकों के संरक्षण का परिणाम है। विदेशी शक्तियाँ अपनी सामरिक तथा कूटनीतिक रणनीतियों के अनुरूप भारतीय लोकतंत्र को अस्थिर करने का प्रयास नक्सलवादी आंदोलन को सैन्य आर्थिक तथा वैचारिक मद्द प्रदान कर रहे हैं।

मार्च पर नक्सली

माओत्सेतुंग
नक्सल प्रणेता

भारतीय सामाजिक संरचना की विसंगतियाँ अन्यायपूर्ण वितरण, भ्रष्टाचार से पीड़ित जनसामान्य के सामने नक्सलवादी एक भ्रम उत्पन्न कर रहे हैं। जनतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली में नेता सामाजिक संरचना का बड़ी चालाकी से प्रयोग करते हैं। राजनेता जन समर्थन की प्राप्ति के लिये दीर्घकालिक वैकासिक रणनीति के बजाय समूहों की नीतियों का समर्थन करते हैं।

– नक्सलवादी आंदोलन को भी विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देते रहे हैं। तीन दशक पूर्व अन्यायपूर्ण भूस्वामित्व तथा शोषणकारी व्यवस्था के प्रत्यूत्तर में आया यह जन आंदोलन सीधे सत्ता के विरूद्ध हो गया है। नक्सली अराजकता का पर्याय बनकर माफिया गिरोहों की तरह कार्य कर रहे हैं। उनका उद्देश्य भय के सहारे धन उगाही करना एवं वर्चस्व स्थापित करना हो गया है। 1990 में नक्सल गतिविधियों में व्यापक मजबूती। उन्होंने अपने संबंधों को नेपाल के माओवादियों के साथ पुख्ता किया, तत्पश्चात पेरू फिलीपाइन्स, श्रीलंका, बांग्लादेश के उग्रवादी संगठनों से अपने गणजोड़ स्थापित किए। माओवादियों के हथियार खरीदने के स्पष्ट प्रमाण मिल चुके हैं। विभिन्न नामों से सक्रिय माओवादियों ने देश के भीतर एक बड़ा नेटवर्क फैला रखा है।

1970 और 1980 के दशक में नक्सल वाद का प्रभाव पहले केवल बंगाल में, लेकिन अब पूर्व के साथ दक्षिण के राज्यों में भी खासा असर देखने में आ रहा है। 92000 Km का क्षेत्र (विशेष क्षेत्र – जिसे नक्सली **रेड कॉरिडोर** कहते हैं) में नक्सल सक्रियता ज्यादा है।

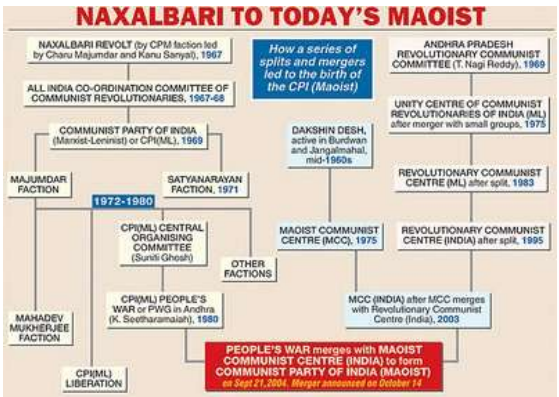

नक्सलवाद बनाम माओवाद :–

कोई माने या न माने माओ लिखित इतिहास के एक महान साम्यवादी सिद्धान्त शास्त्री थे वे एक क्रांतिकारी, कवि, इतिहासकार, दार्शनिक, प्राचीन विचारों वाले विद्वान तथा सर्वप्रथम गुरिल्ला युद्धकला के क्षेत्र में पूर्णतावादी थे, कोहेन के अनुसार, माओ का क्रांतिकारी प्रवर्तक के रूप में प्रमुख दावा इस तथ्य पर आधारित था कि ग्रामीण क्षेत्रों से लड़े जाने वाले दीर्घकालीक गुरिल्ला युद्धकर्म को व्यवस्थित स्त्रातेजी के प्रतिपादन पर आधारित होना चाहिये।

माओत्सेतुंग

माओ चीनी इतिहास के पारंगत शिष्य थे। इतिहास से उन्होंने यह सीखा कि सफलता प्रमुख रूप से संगठित और अनुशासित प्रयास से प्राप्त की जा सकती है। वह प्राचीन चीनी विचारक सुन जू कि पुस्तक **"आर्ट ऑफ वार"** से विशेष रूप से प्रभावित थे। ग्रिफिथ ने इस पुस्तक को माओत्से-तुंग के स्त्रातेजिक सिद्धांतों और चीनी सेनाओं के सामरिकी सिद्धांतों का स्रोत माना है।

14 मार्च 2007 को कन्या छात्रावास में 27 मासूम छात्राओं के समक्ष नक्सलियों द्वारा सुरक्षाबलों का किया गया नृशंस संहार पर उपजी रचना

माओ आओ

■ नितिन राजीव सिन्हा

रानी बोदली की बेटियां, रानी प्यारी मासूम बेटियांथी खामोश थी सहमी,
आखिर पेन्सिल स्याही की राह थामी थी इन्होंने पर एक खामोश रात में,
उन्होंने देखी है विभत्य होली खून की उनके अपने कटते रहे,
उनके अपने ही उन्हें काटते रहे बात क्रांति की हो रही थी,
खूनी क्रांति की पचपन युवा काट दिए गए,
नन्हें बचपन की आंखों के सामने ककहरा पढ़ने की ख्वाहिशें थी जिनकी,
वे स्वजनों के लाशों के ढेर के समक्ष मौन खड़ी थी।
माओवाद जिंदाबाद के नारे गूंजे थे, वहशियों के पदचाप सुने थे आंखों की
अश्रुधाराएंसूख चुकी थी,
क्रन्दन मन में दबा सा था बेजुबांखड़ी थी नन्ही बेटियां, नटखट बचपन को
भूलकर कह रही थी वे लाडली,
मासूम बेटियांमाओ, आओ देखो, तुम्हारे नाम पर कैसी क्रांति मची है।
माओ तुमने छीना बचपन हमारा है,
माओ आओ हमारी शांति हमें वापस दिलाओ ..।
माओ तुम हमें शिक्षा दे नहीं सकते, गीत खुशी के गा नहीं सकते।
हमारी राखियों की सजी थाल, तुम उजाड़ देते हो
हमारे मासूम बचपन पर से, पिता का साया तुन छीन लेते हो
आज बचपन प्रत्यक्षदर्शी बना है, पचपन मौतों का
पर नियति बम बारुद की, हमें बार-बार दहलाती है
जीवन के मासूम गान पर विराम, वह लगाती है।
माओ आओ हमारा बचपन, हमें लौटाओ
न करो क्रांति, हमें शांति से जीवन पथ पर बढ़ जाने दो .....।
हम तो हैं, नादान बालाएं
हमने नही पाली है, बड़ी आशाएं
प्रकृति के नयनाभिराम वादियों में, महज शिक्षा हमारी ख्वाहिशेंहं
अज्ञान के अंधकार में, अक्षर ज्ञान हमारी चाहत है
माओ आओ हमें, हमारा बचपन लौटाओ
पचपन बंधु बांधवों की नरबलि, का खौफनाक मंजर आंखों में रह-रहकर घूमता है
भय मुक्त समाज हमारी मांग है, भय मुक्त जीवन हमारी ख्वाहिश
तुम्हारी क्रांति हमें डराती है, हमें धमकाती है
सड़क, शिक्षा, खाद्यान्न से, हमें बेजार करती है
माओ आओ हमारी माताओं की, उजड़ी सुहाग लौटाओ.. ?
तुम्हारी दी हुई क्रांति हमसे शांति छीनती है
माओ आओ पर, हमारा बचपन बीत जाने दो
हमें योग्य नागरिक बन जाने दो, फिर तुम आना और देखना
तुम्हारी क्रांति अच्छी या हमारी शांति अच्छी
माओ आओ और रोओ, हमारे स्वजनों की समाधियोंपर
हमारे बचपन पर, इन पचपन लाशों पर।
माओ तुम्हारी क्रांति दुर्गंध फैलाती है
हमारे स्वजनों की कुर्बानियां, इन्हें शर्मिन्दा करती है
विघ्न संतोष का गंध, क्या संदेश देती है
क्या मांग करती है क्या उद्देश्य है, इनके ...? समझाओ हमें, बताओ हमें गांधी,
सुभाष, चाचा नेहरु के देश में
तुम अतिक्रमण क्यों करते हो
तुम्हारा नैराश्य चीन का अभिशाप है, माओ आओ हमें अपने अभिशाप से बचाओ ..।

(कवि हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र आज का दिन के संपादक हैं।)

माओ पाश्चात्य विचारकों से भी प्रभावित थे, उनकी रूचि विशेष रूप से रूसी गृह-युद्ध में थी। उन्होंने क्लाजविट्ज, जोमिनी, मार्क्स-एन्जल्स, लेनिन, आदि की रचनाओं का गहन अध्ययन किया। परन्तु उन्होंने इन सिद्धांतशास्त्रीयों के विचारों को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया। वे अपने देश की समस्याओं के प्रति अधिक जागरूक थे। उन्होंने गलत प्रचार के प्रति चेतावनी दी और कहा कि सामान्य रूप से युद्ध के नियमों का अध्ययन करना चाहिये जिनकी उसने बाहरी देशों के नकल की थी। यदि इसका यन्त्रवत नकल व प्रयोग किया जाये जैसे कि रूसी गृहयुद्ध के अनुभव में देखा गया, इनके परिणाम विफलता में परिणित होंगे।

संभवतः इसीलिये माओ ने मार्क्स एवं लेनिन के सिद्धांतों में कुछ संशोधन किया। उनका प्रमुख योगदान विशेष रूप से चीन के समान पिछड़े देश के संदर्भ में उनके सिद्धांतों को एशियाई वातावरण के अनुकूल बनाना था। उन्होंने पाया कि औद्योगिक सर्वहारा वर्ग के द्वारा क्रान्ति के मार्क्सवादी सिद्धांत का नेतृत्व चीनी परिस्थितियों में अनुपयुक्त था। पदनुसार राजनैतिक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु औद्योगिक सर्वहारा वर्ग की अपेक्षा कृषक वर्ग क्रान्तिकारी संघर्ष की प्रमुख शक्ति बना। बाद में माओ के द्वारा प्रतिपादित विचारों के **हो-ची-मिन, गियाप (दोनों वियतनाम), फिदेल कास्त्रो (क्यूबा)** तथा अन्य ने अपने सिद्धांतों का आधार बनाया।

युद्ध और राजनीति के नजदीकी सम्बन्ध माओ के इस कथन में निर्दिष्ट हैं कि युद्ध को एक क्षण भी राजनीति से पृथक नहीं किया जा सकता है। **क्लाजविट्ज** के विचार का समर्थन करते हुये माओ ने जोर देकर कहा कि युद्ध अन्य साधनों द्वारा राजनीति का पुनरारम्भ होता है। लेनिन ने भी युद्ध को राजनीतिक सम्बन्ध के हिंसात्मक अभिव्यक्ति के रूप में माना था। **फ्रूजे ने व्यक्त किया कि राजनीतिक गतिविधि एक नवीन शस्त्र तभी बनेगी जब वह समय समय पर रायफलों और बंदूकों से अधिक शक्तिशाली सिद्ध होगी।** और यह सेना की लड़ने की क्षमता में प्रभावकारी वृद्धि करेगी। माओ ने युद्ध को रक्तपात के साथ राजनीति और राजनीति को बिना रक्तपात वाले युद्ध के रूप में वर्णित किया। उनका कथन कि **'राजनीतिक शक्ति बंदूक की नली की नोक से निकलती है',** को अधिक शाब्दिक अर्थ में नहीं लेना चाहिये। क्रान्तिकारी होते हुये भी माओ ने **अहिंसक राजनीतिक शक्ति** के महत्व को समझा।

नक्सलवाद का जनक

चारू मजुमदार – एक परिचय

चारू मजुमदार

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के एक नेता चारू मजुमदार की कहानी **'अमीर से फकीर'** हो जाने की तरह हैं।

1918

में प्रगतिवादी भू-स्वामी परिवार में जन्म लेने वाले चारू मजूमदार को CM के नाम से जाना जाता था।

1968

- खेतिहर मजदूरों के मद्देनजर 1968 के एतिहासिक नक्सलवादी आंदोलन की नींव (मजबूत) रखी।
- ये वर्ग भेद के खिलाफ थे तथा पेटी बुर्जुवा राष्ट्रीय क्रांतिकारियों से प्रभावित थे।
- अनुशीलन दल वालों ऑन बंगाल स्टूडेंट्स एशोसिएशन में शामिल हो गए। 1937-38 में कॉलेज में निकलने के बाद क्रांग्रेस में शामिल तथा बीड़ी मजदूरों को संगठित किया।
- इसी के पश्चात् भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल।
- जलपाईगुड़ी में खेतिहर मजदूरी के लिये काम करना शुरू किया।
- वामपंथी कार्यकर्ता के रूप में गिरफ्तारी वारंट से भूमिगत होने पर मजबूर।

1943

के भीषण अकाल के दौरान् छेड़े गए फसल जप्ती आंदोलन को मिली सफलता से उनका कद ऊँचा हो गया।

1946

उत्तर बंगाल के तेमांगा के सशस्त्र आंदोलन में शमिल होने के बाद सशस्त्र संघर्ष के दृष्टिकोण के प्रति उनमें बदलाव आया।

1948

चाय बागान के मजदूरों के लिये संघर्ष करना आरंभ किया। लेकिन इसी साल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उन्हें 3 साल जेल में बिताने पड़े।

1952

जलपाईगुड़ी की पार्टी सदस्य **लीला मजूमदार सेनगुप्त** से विवाह। सिलीगुड़ी में रहकर दोंनों ने अपनी कार्यवाही संचालित की। उनकी गरीबी क्रांतिकारी भावनाओं को आहत न कर सकी। अब उन्होंने चाय बागान के मज़दूरों और रिक्शाचालकों को संगठित करने का कार्य किया।

1956

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी की पालघाट कांग्रेस में भारतीय स्थितियों में सशस्त्र क्रांति की विचारधारा परवान चढ़ी।

1962

भारत चीन युद्ध के दौरान् उन्हें फिर जेल जाना पड़ा। यह तो वक्त था जब भारत में वाम आंदोलन करवट बदल रहा था।

1964–65

में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और इस समय उन्हें आराम की सलाह दी गई। यही वो वक्त था जब उन्होंने जेल में मार्क्स-माओ के विचारों का गुढ़ अध्ययन किया।

1964

कैडर के बीच सैद्धांतिक मतभेदों के चलते CPI में दो फाड़ हो गया तभी चारू मजूमदार ने CPI (M) से जुड़ गए।

लेकिन चुनावी राजनीति में शामिल होने और सशस्त्र संघर्ष स्थगित करने (जब तक भारत में क्रांतिकारी परिस्थितियाँ विकसित न हों जाऐं) से असहमत थे।

1965–67

के दौरान् उनके लेख और भाषण जो बाद में एतिहासिक आठ दस्तावेजों के नाम से जाने गए और नक्सलवाद के आधार बने।

1967

CPI (M) ने बंगाल में कांग्रेस के साथ मिलकर युनाइटेड फ्रंट बनाकर सत्ता में भागीदारी ली। चारू और उनके साथियों ने पार्टी पर आरोप लगाया कि पार्टी ने क्रांति के साथ **विश्वासघात** किया है।

25 मई 1967

दार्जलिंग जिले के नक्सलवादी में खेत मजदूरों का एतिहासिक आंदोलन हुआ, जिसे राज्य सरकार ने बुरी तरह कुचल दिया। लेकिन नक्सलवादी विचारधारा ने न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा की बल्कि उसका फैलाव भी किया। लेकिन तमिलनाडू, केरल, उत्तरप्रदेश, बिहार, कर्नाटक, उडीसा, तथा बंगाल के नक्सलवादी कामरेडो ने CPM से नाता तोड़कर **ऑल इंडिया कोआर्डिनेशन कमेटी ऑफ कम्यूनिस्ट रिवाल्यूशनरी** कर दिया।

2 April 1969

को इस CPI (ML) के नाम से जाना गया। **चारू मजूमदार** इसके सहसचिव बने।

1971

के बांग्लादेश युद्ध के दौरान् उनके उग्र वामपंथी नेता मारे गए।

1972

में चारू भूमिगत हो गए। इस वक्त वे भारत के Most Wanted अपराधी थे।

16 July 1972

को कोलकाता में चारू को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद लाल बाजार थाने में दस दिनों तक उन्हें किसी से मिलने नहीं दिया गया। **उसी समय** प्रताड़ना के चलते बंदीग्रह में उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी मौत से CPI (M) का क्रेंद्रिय अधिकरण भंग हो गया और संघर्ष परास्त हो गया। अब हम यहां के शुरूवात कर रहे हैं, नक्सलवाद के एक और प्रणेता **कानू सान्याल** के द्वारा नक्सलवाद को आधार प्रदान करने की गाथा –

कानू सान्याल

1951

में आंध्रप्रदेश से आए कोंडापल्ली सीतारमैया और गुगनपुर उड़ीसा के ख्याति प्राप्त नक्सली नागभूषण पटनायक इनकी पहली मीटिंग बस्तर में उड़ीसा के सीमा प्रांत में हुई थी। उस समय इनका उद्देश्य था कि इस वनांचल में पैसे वाले राजनीतिज्ञों एवं प्रशासकीय अधिकारियों का जो शोषण हो रहा है।

नागभूषण

कोंडापल्ली सीतारमैय्या

उसके विरूद्ध **जन आंदोलन** खड़ा कर नक्सलवाद का फैलाव किया जाए। नागभूषण राष्ट्रीय स्तर के संगठन में कानू सान्याल व चारू मजूमदार के साथ जुड़ गया। अतः यह कार्य आंध्रप्रदेश का कार्य जिम्मा हो गया।

तदुपरांत वहां से बस्तरीय सीमा क्षेत्र में नक्सली गतिविधियों संचालित होती रहीं। उस वक्त बस्तर के चार LIB सदस्य **के के राव, पटनायक, बद्री व अल्पिसियश** ये चारों बस्तर में नक्सलियों की आंध्रप्रदेश से आने व जाने की सूचना रिपोर्ट तैयार कर **मध्यप्रदेश** शासन को देते रहे।

इस वक्त बस्तर में मालिक मकबूजा के सागौन, नमक के बदले चिरौजी, गांव के लोगों को बेगारी कराकर सड़क तालाब बनाया जाना, राजस्व वन और तलॉक के कार्यों में विभागों के नौकरशाही ने बस्तर में बेहिसाब कमाई की और नेता कमीशन खोरी करते रहे। शासकीय योजनाओं के लिये आबंटित राशि प्रशासकीय नौकरशाही और तात्कालीन नेताओं के जेबों में जाते रहे। **बस्तर** जनपद सहकारी बैंक, बुनकर संघ नेताआं के लूट का माध्यम था।

बस्तर महाराजा – प्रवीर चंद्र भंजदेव :–

जब शोषण की अति होने लगी, तो इसके विरोध में प्रवीर चंद्र भंजदेव जी ने आवाज उठाई। तो वे भी नौकरशाही की आंखों में किरकरी बन गए। फिर प्रवीर ने दिल्ली और भोपाल में बस्तर की आवाज बुलंद करने हेतु विधायक और सांसद खड़ा किए और प्रवीर की इम्मेशन पापुलेरिटी आदिवासियों में होने की वजह से वे जिसे भी खड़े करते थे वे जीतते ही थे। इस कारण बस्तर में विरोधी पार्टी का जीतना असंभव हो जाता था।

प्रवीर चंद भंजदेव
महाराजा बस्तर

बस्तर क्षेत्र में नक्सलियों के प्रवेश में एक बड़ा उछाल 26 मार्च 1966 के बर्बर पुलिस गोलीकांड के बाद आया। वह चैत नवरात्रि की चतुर्थी का दिन था जब दंतेश्वरी मंदिर (बस्तर में) के प्रमुख पुजारी प्रवीरचंद भंजदेव को जगदलपुर स्थित उनके राजमहल में पुलिस की गोली से छलनी कर दिया।

प्रवीरचंद भंजदेव काकतीय विश्वविद्यालय गत चार दशकों से दण्डकारण्य क्षेत्र के नक्सलियों का सबसे बड़ा वैचारिक केन्द्र बना हुआ था। प्रवीरचंद भंजदेव की हत्या से बस्तर में उभरे असंतोष का दोहन करने के लिये कॉकतीय विश्वविद्यालय से नक्सली वहां पहुंचे। आज भी बस्तर के माओवादियों की कमान आंध्रप्रदेश के उग्रवादी संभाल रहे है, जिस मुक्त दण्ड कारण्य राज्य के लक्ष्य को लेकर नक्सली/माओवादी चल रहे हैं, उसका केन्द्र बस्तर का अबूझमाड़ है।

माओवादी छत्तीसगढ़ को अपना शक्ति केन्द्र बना रहे हैं। पिछले चार दशकों के दौरान् उन्होने जो बस्तर में सुदृढ़ आधार बनाया, उसके लिये पिछली सरकारें की अदूरदर्शिता भी काफी हद तक जिम्मेदार थी। कुछ राजनीतिक दल महज चुनावी लाभ के लिये उग्रवादियों का सहयोग लेते रहे।

बस्तर में माओवादियों के लिये बस्तर के घने जंगल उपलब्ध हैं। उन्हें अबूझमाड़ का 600 वर्ग कि.मी. का विशाल और लगभग अगम्य क्षेत्र प्राप्त है। विपुल वन और खनिज़ संपदा पर उनका कब्जा है। बस्तर में उन्होंने दो पीढ़ियों को उग्रवाद में प्रशिक्षित किया है। बस्तर में उन्होंने इतना अर्थ संचय किया है कि उससे वे अपने व्यापक और दूरगामी लक्ष्य की पूर्ति के लिये पर्याप्त संसाधन जुटा सके हैं। यहां परमाणु शक्ति के कच्चे माल के लिये **कोलम्बाइट अयस्क** उपलब्ध है। कुछ साल पहले यह ज्ञात हुआ था कि माओवादियों द्वारा सैकड़ों किलोग्राम कोलम्बाइट अयस्क का अवैध खनन किया गया।

इस समय यहां के अंदरूनी वनग्रामों में नक्सल लीडरों ने बस्तरियों के हो रहे शोषण, नौकरशाहों और नेताओं से भयाक्रांत मूल लोगों और उनकी ज्ञानाल्पता को भरपूर दुरूप्रयोग किया गया, साथ ही उस **भय मिश्रित आक्रोश को -नक्सलवाद** की राह दिखाना जारी रखा। तदोपरांत नक्सल गतिविधियां व वनवासी जनमंच तैयार होने लगे। उसी समय बस्तर के राजनीति में एक नया पृष्ठ भी जुड़ने लगा, वह यह कि उत्तर भारत में खास दो प्रांतों से लगातार लोगों का आना आरंभ हो चुका था। बस्तर के शासन प्रशासन में इनकी घुसपैठ नीति, हाट बाजार में व्यापारिक कब्जा भी नक्सलवाद को बढ़ाने में अहम् भूमिका रही है। वनोपज, तेंदुपत्ता, महुआ फूल, चिरौंजी, ईमली जैसे अनेक वनोपज कौड़ियों के दाम में खरीदने-बेचने का काम धड़ल्ले से चलता रहा।

नक्सल उद्भव : एक नजर में

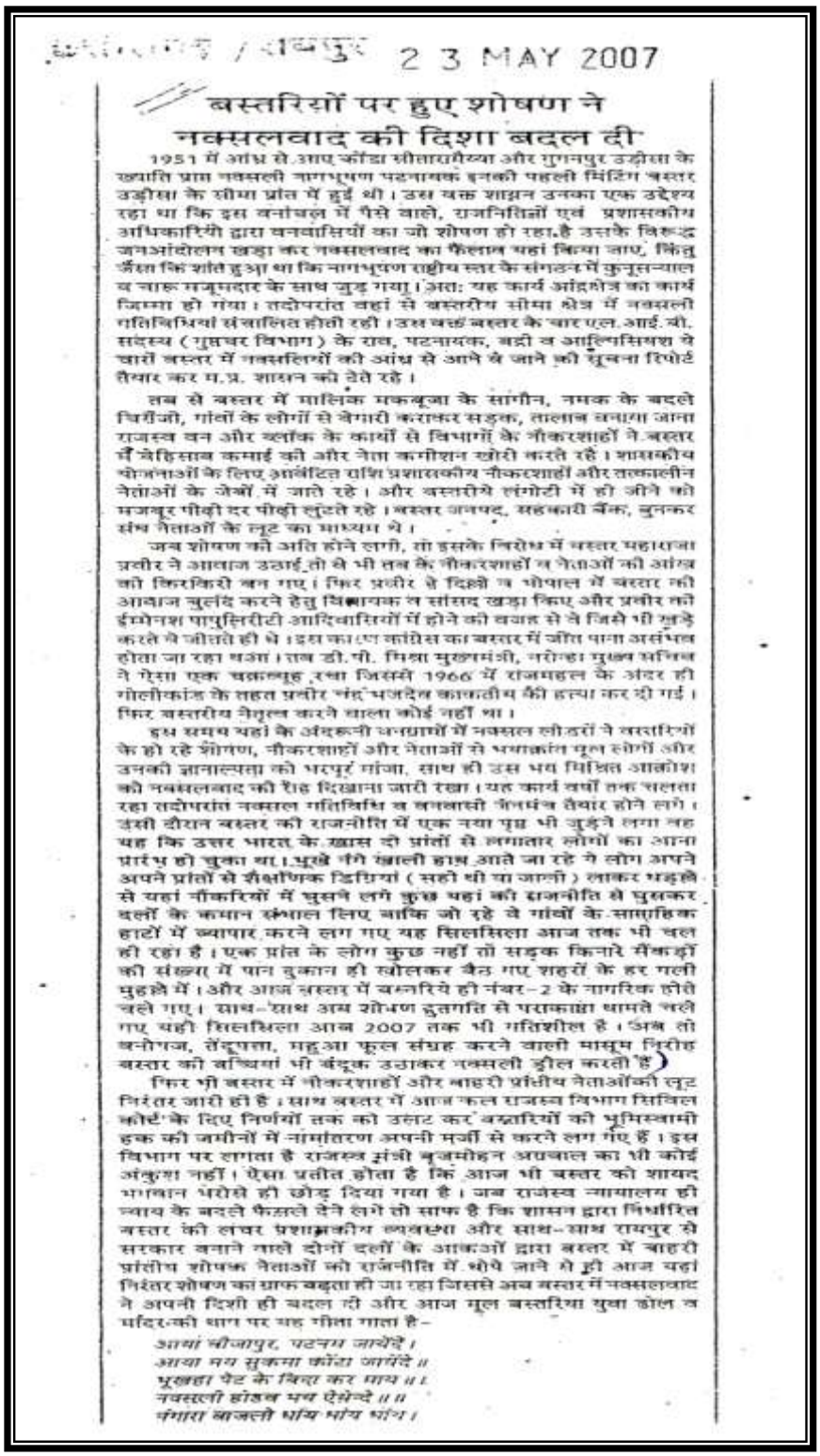

[illegible] / रायपुर 23 MAY 2007

बस्तरियों पर हुए शोषण ने नक्सलवाद की दिशा बदल दी

1951 में आंध्र से आए कोंडा सीतारमैय्या और गुनपुर उड़ीसा के ख्याति प्राप्त नक्सली नागभूषण पटनायक इनकी पहली मिटिंग बस्तर उड़ीसा के सीमा प्रांत में हुई थी। उस वक्त शासन उनका एक उद्देश्य रहा था कि इस वनांचल में पैसे वाले, राजनितिज्ञों एवं प्रशासकीय अधिकारियों द्वारा वनवासियों का जो शोषण हो रहा है उसके विरूद्ध जनआंदोलन खड़ा कर नक्सलवाद का फैलाव यहां किया जाए, किंतु जैसा कि ज्ञात हुआ था कि नागभूषण राष्ट्रीय स्तर के संगठन में कनुसन्याल व चारू मजूमदार के साथ जुड़ गया। अतः यह कार्य आंध्रक्षेत्र का कार्य जिम्मा हो गया। तदोपरांत वहां से बस्तरीय सीमा क्षेत्र में नक्सली गतिविधियां संचालित होती रही। उस वक्त बस्तर के चार एल.आई.बी. सदस्य (गुप्तचर विभाग) के राव, पटनायक, बद्री व आल्मिसियश ये चारों बस्तर में नक्सलियों की आंध्र से आने व जाने की सूचना रिपोर्ट तैयार कर म.प्र. शासन को देते रहे।

तब से बस्तर में मालिक मकबूजा के सांगौन, नमक के बदले चिरौंजी, गांवों के लोगों से बेगारी कराकर सड़क, तालाब बनाया जाना राजस्व वन और ब्लॉक के कार्यों से विभागों के नौकरशाहों ने बस्तर में बेहिसाब कमाई की और नेता कमीशन खोरी करते रहे। शासकीय योजनाओं के लिए आबंटित राशि प्रशासकीय नौकरशाहों और तत्कालीन नेताओं के जेबों में जाते रहे। और बस्तरीये लंगोटी में ही जीने को मजबूर पीढ़ी दर पीढ़ी लुटते रहे। बस्तर जनपद, सहकारी बैंक, बुनकर संघ नेताओं के लूट का माध्यम थे।

जब शोषण की अति होने लगी, तो इसके विरोध में बस्तर महाराजा प्रवीर ने आवाज उठाई तो वे भी तब के नौकरशाहों व नेताओं की आंख की किरकिरी बन गए। फिर प्रवीर ने दिल्ली व भोपाल में बस्तर की आवाज बुलंद करने हेतु विधायक व सांसद खड़ा किए और प्रवीर की ईम्मेनश पापुलिरीटी आदिवासियों में होने की वजह से वे जिसे भी खड़े करते वे जीतते ही थे। इस कारण कांग्रेस का बस्तर में जीत पाना असंभव होता जा रहा था। तब डी.पी. मिश्रा मुख्यमंत्री, नरोन्हा मुख्य सचिव ने ऐसा एक चक्रव्यूह रचा जिससे 1966 में राजमहल के अंदर ही गोलीकांड के तहत प्रवीर चंद्र भजदेव काकतीय की हत्या कर दी गई। फिर बस्तरीय नेतृत्व करने वाला कोई नहीं था।

इस समय यहां के अंदरूनी वनग्रामों में नक्सल लीडरों ने बस्तरियों के हो रहे शोषण, नौकरशाहों और नेताओं से भयाक्रांत मूल लोगों और उनकी ज्ञानाल्पता को भरपूर भांपा, साथ ही उस भय मिश्रित आक्रोश को नक्सलवाद की राह दिखाना जारी रखा। यह कार्य वर्षों तक चलता रहा तदोपरांत नक्सल गतिविधि व वनवासी जनमंच तैयार होने लगे। इसी दौरान बस्तर की राजनीति में एक नया पृष्ठ भी जुड़ने लगा वह यह कि उत्तर भारत के खास दो प्रांतों से लगातार लोगों का आना प्रारंभ हो चुका था। भूखे नंगे खाली हाथ आते जा रहे ये लोग अपने अपने प्रांतों से शैक्षणिक डिग्रियां (सही थी या जाली) लाकर धड़ल्ले से यहां नौकरियों में घुसने लगे कुछ यहां की राजनीति में घुसकर दलों के कमान संभाल लिए बाकि जो रहे वे गांवों के साप्ताहिक हाटों में व्यापार करने लग गए यह सिलसिला आज तक भी चल ही रहा है। एक प्रांत के लोग कुछ नहीं तो सड़क किनारे सैकड़ों की संख्या में पान दुकान ही खोलकर बैठ गए शहरों के हर गली मुहल्ले में। और आज बस्तर में बस्तरिये ही नंबर-2 के नागरिक होते चले गए। साथ-साथ अब शोषण द्रुतगति से पराकाष्ठा थामते चले गए यही सिलसिला आज 2007 तक भी गतिशील है। अब तो वनोपज, तेंदूपत्ता, महुआ फूल संग्रह करने वाली मासूम निरीह बस्तर की बच्चियां भी बंदूक उठाकर नक्सली ड्रील करती हैं।

फिर भी बस्तर में नौकरशाहों और बाहरी प्रांतीय नेताओं की लूट निरंतर जारी ही है। साथ बस्तर में आज कल राजस्व विभाग सिविल कोर्ट के दिए निर्णयों तक को उलट कर बस्तरियों की भूमिस्वामी हक की जमीनों में नामांतरण अपनी मर्जी से करने लग गए हैं। इस विभाग पर लगता है राजस्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल का भी कोई अंकुश नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि आज भी बस्तर को शायद भगवान भरोसे ही छोड़ दिया गया है। जब राजस्व न्यायालय ही न्याय के बदले फैसले देने लगे तो साफ है कि शासन द्वारा निर्धारित बस्तर की लचर प्रशासकीय व्यवस्था और साथ-साथ रायपुर से सरकार बनाने वाले दोनों दलों के आकाओं द्वारा बस्तर में बाहरी प्रांतीय शोषक नेताओं को राजनीति में थोपे जाने से ही आज यहां निरंतर शोषण का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा जिससे अब बस्तर में नक्सलवाद ने अपनी दिशा ही बदल दी और आज मूल बस्तरिया युवा ढोल व मांदर की थाप पर यह गीता गाता है-

आयां बीजापुर, पटनम जायेंदे।
आया मय सुकमा कोंटा जायेंदे॥
भूखहा पेट के विरा कर माय॥।
नक्सली होवब मय ऐसेन्दे॥॥
मंगारा बाजती धांय धांय धांय।

नक्सल उद्भव : एक नजर में

छत्तीसगढ़ में माओवाद की गहरी जड़ें

दृष्टिकोण | रमेश नैयर

[illegible]वादी हिंसा का विस्तार अब [illegible] जंगल तक हो चुका है। [illegible] की सात पार्टियों की संयुक्त [illegible] में पहली बार माओवादियों के [illegible] होने के बाद भी उग्रवादी हिंसा [illegible] बिहार से लगे वहां के तराई [illegible] उभर रहे हैं, उससे नए खतरे [illegible] बन रही हैं। प्राप्त संकेतों से [illegible] बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, और उड़ीसा में माओवादी हिंसा [illegible] अधिक विस्तार हो सकता है। [illegible] में छत्तीसगढ़ पर माओवादी [illegible] का खास मनोविक है।

[illegible] उठता है कि आखिर [illegible]वादी छत्तीसगढ़ को अपनी [illegible]धियों का केन्द्र क्यों बनाना [illegible] है? जिन्होंने छत्तीसगढ़ और [illegible] भी बस्तर जैसे शांत तथा सुरम्य [illegible] नक्सली हिंसा का गढ़ बनते [illegible] है, उन्हें इस प्रश्न का उत्तर [illegible] में अतीत की गहराइयों में [illegible] होगा। आजादी के बाद जब [illegible] हैदराबाद रियासत में [illegible] कम्युनिस्टों के खिलाफ [illegible] के मार्गदर्शन में पुलिस ने कार्रवाई [illegible] तो उनमें से कुछ 'क्रांतिकारी' [illegible] सत्ता के घने वन्य क्षेत्र में [illegible] दक्षिण [illegible] दी गई जानकारी के अनुसार [illegible] बस्तर के डिप्टी कमिश्नर [illegible] ने [illegible] एक सशस्त्र वामपंथी उग्रवादी को [illegible] उड़ा दिया गया। वैसे भी [illegible] गोदावरी नदी के आसपास [illegible] जंगलों में आंध्र तथा बस्तर के [illegible] का आना-जाना लगा रहता था [illegible] राजनीतिक और प्रशासनिक [illegible] जैसे-जैसे बढ़ता गया, आंध्र [illegible] वामपंथियों के आगमन में इजाफा होता चला गया। राजनीतिक [illegible] जब मध्यप्रदेश की सरकार ने बस्तर के पूर्व नरेश प्रवीरचंद्र भंजदेव को प्रताड़ित करने का दौर चलाया तो बस्तर के आदिवासियों ने सरकार का प्रतिरोध किया। सरकार ने आदिवासी असंतोष के दमन के लिए पुलिस बल का सहारा लिया। आजादी के बाद की पहली बर्बर पुलिस गोलीबारी बस्तर के लोहण्डीगुड़ा में 31 मार्च, 1961 को हुई थी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार उसमें 12 आदिवासी मारे गए थे लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सौ से अधिक आदिवासियों को पुलिस ने गोलियों से भून दिया था। आदिवासी प्रतिरोध इसलिए कर रहे थे कि सरकार ने पूर्व नरेश प्रवीरचंद्र भंजदेव को अपदस्थ करके उनके अनुज विजयचंद्र भंजदेव को स्थापित कर दिया था। इतना ही नहीं, प्रवीर को गिरफ्तार कर नरसिंहगढ़ जेल में डाल दिया गया।

बस्तर में नक्सलियों के प्रवेश में एक बड़ा पड़ाव 25 मार्च, 1966 के बर्बर पुलिस गोलीकांड के बाद आया। वह चैत्र नवरात्रि की चतुर्थी का दिन था, जब बस्तर के आदिवासियों की आस्था का केन्द्र दंतेश्वरी के प्रमुख पुजारी प्रवीरचंद्र भंजदेव को उनके जगदलपुर स्थित राजमहल में पुलिस ने गोलियों से छलनी कर दिया। प्रवीरचंद्र भंजदेव काकतीय राजवंश के थे। इसी वंश का काकतीय विश्वविद्यालय [illegible] नक्सलों ने दण्डकारण्य क्षेत्र के नक्सलियों (अब माओवादियों) का सबसे बड़ा वैचारिक प्रशिक्षण केन्द्र बना हुआ है। प्रवीरचंद्र भंजदेव की हत्या से बस्तर के आदिवासियों में उपजे असंतोष का दोहन करने के लिए काकतीय विश्वविद्यालय से नक्सली वहां पहुंचे। आज भी बस्तर के माओवादियों की कमान आंध्र के उग्रवादी संभाल रहे हैं, जिस 'मुक्त

दण्डकारण्य राज्य' के लक्ष्य को लेकर माओवादी चल रहे हैं, उसका केन्द्र बस्तर का अबूझमाड़ है। माओवादी छत्तीसगढ़ को अपना शक्ति केन्द्र बना रहे हैं। पिछले चार दशकों के दौरान बस्तर में जो सुदृढ़ आधार बनाया, उसके लिए पिछली सरकारों की अदूरदर्शिता भी काफी हद तक जिम्मेदार थी। कुछ राजनीतिक दल महज चुनावी लाभ के लिए उग्रवादियों का सहयोग लेते रहे। वे समझते रहे कि वे उग्रवादियों का उपयोग कर रहे हैं, परंतु वस्तुतः प्रायः समस्त राजनीतिक पार्टियों का इस्तेमाल उग्रवादी अपनी दीर्घकालिक रणनीति के तहत करते आ रहे थे। बस्तर में माओवादियों को [illegible] उपलब्ध है। उन्हें अबूझमाड़ का 600 वर्ग किलोमीटर का विशाल और लगभग अगम्य क्षेत्र प्राप्त है। विपुल वन और खनिज संपदा पर उनका कब्जा है। बस्तर में उन्होंने दो पीढ़ियों को उग्रवाद में प्रशिक्षित किया है। बस्तर से उन्होंने इतना अर्थ-संचय किया है कि उससे वे अपने व्यापक और दूरगामी लक्ष्य की पूर्ति के लिए पर्याप्त संसाधन जुटा सकें। एक जानकारी के अनुसार माओवादी छत्तीसगढ़ को अपना शक्ति केन्द्र बनाने के लिए अधिकाधिक ताकत इसलिए भी झोंक रहे हैं कि उन्हें वहां परमाणु शक्ति के लिए कच्चे माल के रूप में कोलम्बाइट अयस्क उपलब्ध है। राज्य के खनिज विभाग का हवाला देते हुए पिछले दिनों मीडिया में यह जानकारी आई थी कि बस्तर के दंतेवाड़ा जिले में माओवादियों ने सैकड़ों किलोग्राम कोलंबाइट अयस्क का अवैध खनन किया है। इस अयस्क का उपयोग मैग्नेटिक-संचालित रेलगाड़ियों और रॉकेट-प्रक्षेपकों के लिए किया जा सकता है। छत्तीसगढ़ को माओवादी अपना शक्ति केन्द्र इसलिए भी बनाना चाहते हैं कि यह देश का पहला और इकलौता ऐसा राज्य है, जहां दक्षिण बस्तर में उनके विरुद्ध सलवा जुडूम के नाम से जन-प्रतिरोध खड़ा हुआ। यद्यपि कांग्रेस और भाजपा पार्टियों का चरित्र तथा कार्यशैली लगभग एक जैसी ही रही है, फिर भी भाजपा सरकारों के खिलाफ माओवादियों का क्रोध अधिक भड़कता है। यह इसलिए कि मध्यप्रदेश और अब छत्तीसगढ़ में जब-जब भाजपा की सरकार बनी, उसने वामपंथी उग्रवादियों के खिलाफ वैचारिक [illegible] की पहल की। अविभक्त मध्यप्रदेश में सुंदरलाल पटवा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में जनजागरण अभियान चलाया, तो छत्तीसगढ़ की डॉ. रमन सिंह सरकार ने सलवा जुडूम को समर्थन-संरक्षण दिया।

दक्षिण बस्तर के बीजापुर के रानीबोदली में माओवादियों द्वारा किए गए जबरदस्त आक्रमण का भी मुख्य रूप से कारण यह था कि रानीबोदली वह क्षेत्र है, जहां उग्रवाद के विरुद्ध आदिवासी सलवा जुडूम के नाम पर एकजुट हुए थे। माओवादियों ने बस्तर में और बड़े पैमाने पर हत्याएं करने की धमकी दी है। पिछले दिनों बस्तर में ही कहीं पर माओवादियों की नौवीं कांग्रेस में लिए गए फैसलों की जो जानकारी सामने आई है, उसका तकाजा है कि उग्रवाद के दमन के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सुरक्षा संबंधी एक समन्वित राष्ट्रीय नीति बनाई जाए। छत्तीसगढ़ जैसे क्षेत्रों की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति को देखते हुए वहां माओवादी हिंसा से निपटने के लिए अधिक व्यावहारिक कदम उठाने होंगे। आंध्रप्रदेश के बाद पश्चिम बंगाल में माओवादी [illegible] के आने का [illegible] गलियारा बन गया है, उसने [illegible] के लिए अतिरिक्त चिंता उत्पन्न कर दी है। [illegible] में सांसद सुनील महतो की हत्या में पश्चिम बंगाल के माओवादियों की गिरफ्तारी के बाद का [illegible] भी यही चेतावनी देता है कि नेपाल से पश्चिम बंगाल के सीमांत [illegible] दक्षिण तक वामपंथी उग्रवाद भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरनाक रूप लेता जा रहा है।

(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

(ब) विकास

INDIAN POLITICAL PARTY

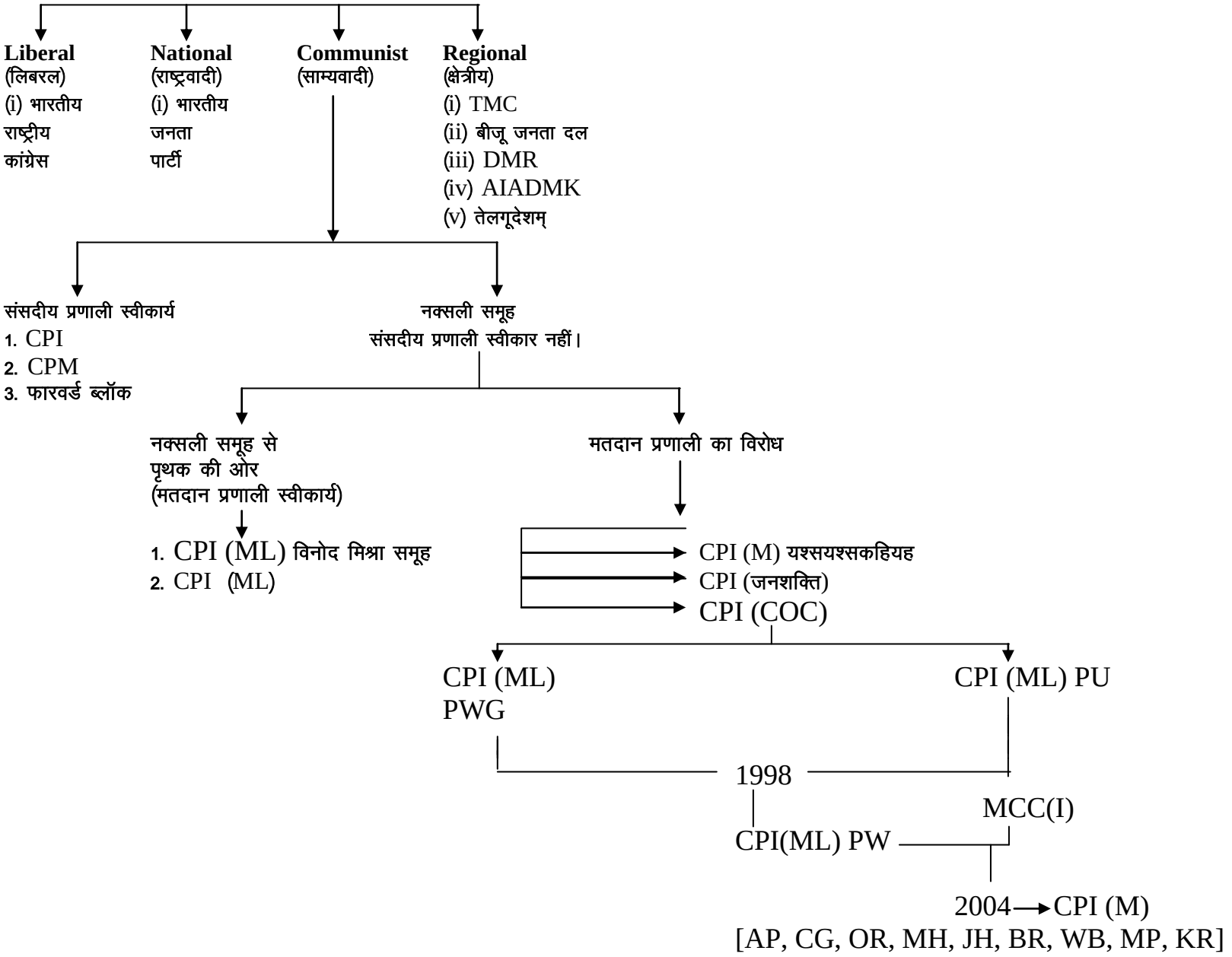

Organisational Hierarchy: Communist Party of India (Maoist)

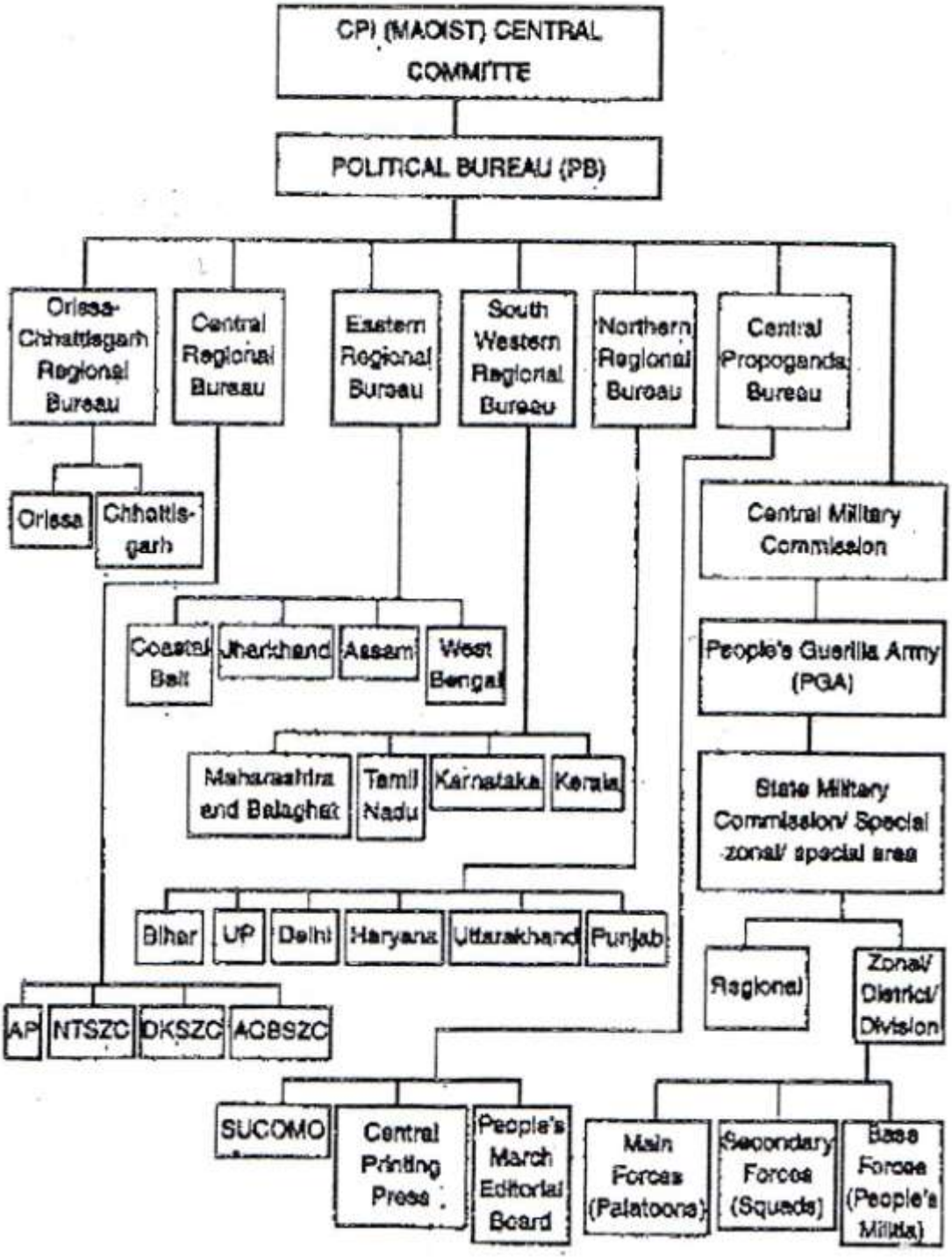

''विकास – क्रम''
(वर्षानुसार)

वास्तव में नक्सलवादी विचार को सैद्धांतिक समर्थन अप्रेल 1969 में मिला जब चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी की नवीं कांग्रेस संपन्न हुई। जिसमें माओ के विचारों का उपयोग करते हुये चारू मजुमदार ने घोषणा की थी कि **''चीन का चेयरमेन हमारा चेयरमेन है''**

1967 :- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता चारू मजूमदार और कानूसान्यल ने सत्ता के खिलाफ एक सशस्त्र आंदोलन की शुरूवात की, यह एक **सशस्त्र किसान आंदोलन** था।

1. वर्ष 1947 में जब देश स्वतंत्र हुआ, ठीक उसके बाद वर्ष 1948 में आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने छोटी सशस्त्र क्रांति कर दी।

2. वर्ष 1962 में जब चीन ने भारत पर हमला किया तब भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने अलग हुए मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी ने, चीन की जगह भारत को हमलावार बताया।

   इसी समय चारू मजूमदार को जेल जाना पड़ा। क्योंकि समय भारत में वाम आंदोलन करवट बदल रहा था।

3. **1967 ई.** में **नक्सलवादी आंदोलन** का प्रारंभ (मई) पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग जिले के सिलिगुड़ी तहसील के नक्सलबाड़ी के गांव से हुआ।

   जिसमें भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता चारू मजूमदार और कानू सान्याल ने सत्ता के खिलाफ एक सशस्त्र आंदोलन की शुरूवात की। यह एक ''सशस्त्र-किसान आंदोलन'' था।

नक्सलवादियों का दावा है कि भारत में एक **लाल गलियारा** विकसित हो रहा है जो कि उत्तराखंड, उ.प्र., बिहार, झारखंड, म.प्र., छ.ग., उडीसा, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक होते हुए केरल तक फैल जाएगा।

4. **1967 से 196**9 के बीच यह आंदोलन भूमिगत संघर्ष के रूप में असम के पांच, आंध्रप्रदेश के आठ जिलों, बिहार के नौ जिलों, केरल के सात जिलों, मध्यप्रदेश के छः जिलों, महाराष्ट्र के पांच जिलों में फैला गया था। हालांकि ये सभी भूमिगत संघर्ष नक्सलवादियों द्वारा संचालित नहीं थे लेकिन ये सभी किसी ना किसी रूप में नक्सल-बाड़ी से प्रेरित थे।

5. **1970 के मध्य और 1971** के बीच नक्सलवादी हिंसा अपनी चरम पर थी। समझा जाता है कि इस अवधि में लगभग 4000 हिंसक घटनाऐं घटित हुई। अधिकांश घटनाऐं पं. बंगाल में 3500, बिहार 200 तथा आंध्रप्रदेश में 70 हुई थीं।

6. **1971**-नक्सलवादी आंदोलन के बढ़ते प्रभाव, हिंसक गतिविधियों में कमी तथा देश में माओवाद के विस्तार को रोकने के लिये सरकार ने देश के सीमावर्ती राज्यों खासतौर से पं. बंगाल, बिहार और उड़ीसा के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सेना की सहायता से संयुक्त अभियान आरंभ हुआ।

   यह अभियान जुलाई से 15 August 1971 तक चला और इसे **'आपरेशन स्टीपल चेंज'** कोड नाम दिया गया।

   यह अभियान पं. बंगाल के मेदनीपुर, पुरूलिया, वर्धमान और वीरभूमि जिलों और बिहार के धनबाद संथाल परगना जिलों तथा उड़ीसा के मयूरगंज जिले में चलाया गया। इस कार्यवाही के परिणाम सकारात्मक मिले। उपरोक्त जिलों में नक्सलवादियों का संगठन तहस-नहस हो गया और पार्टी के कार्यकर्ता सुरक्षित स्थानों की ओर भाग गए। हिंसा की घटनाओं पर अंकुश लग गया

गए। सबसे बड़ी बात यह थी कि आम लोगों के मन में सरकार की क्षमता के प्रति विश्वास जागृत हुआ।

16 जुलाई 1972 – को कोलकाता पुलिस ने चारू मजूमदार को गिरफ्तार कर लिया और कुछ दिनों के बाद उनकी मृत्यु हो गयी। चारू मजूमदार के निधन के साथ ही नक्सलवादी आंदोलन के एक अध्याय का अंत हो गया।

1972 के बाद – कानू सान्याल – के साथ एक नये अध्याय का आरंभ हुआ। सामन्तवाद को समाप्त करने हेतु साम्यवाद का संघर्ष उस समय उग्र हुआ, जब भूमिहीन किसान एवं उपेक्षित सामाजिक वर्ग ने इसका दामन थाम लिया। प्रारंभिक दौर में नक्सलवादियों ने ''गुरिल्ला युद्ध'' का प्रशिक्षण प्राप्त करके हिंसात्मक गतिविधियों का सहारा लेकर आतंक का साम्राज्य कायम किया। कालान्तर में नक्सलवादी गतिविधियां उग्र रूप धारण करने लगीं।

1975–देश में **आपातकाल** के कारण नक्सली आंदोलन स्थगित हो गया।

गुरिल्ला युद्ध कर्म : एक संक्षिप्त परिचय

मानव द्वारा ज्ञात विभिन्न प्रकार के युद्धों में गुरिल्ला युद्ध कला को प्राचीनतम माना गया है। ऐसी अवधारणा है कि इस विश्व में जन्म लेने वाला प्रथम सैनिक गुरिल्ला ही था और उसके द्वारा अपनाया जाने वाला प्रथम समरतंत्र था- मारो और भागो (Hit & Run)। गुरिल्ला युद्धकर्म को अपना विकास सिद्धांत बनाकर गुरिल्ला, नक्सलवादी राष्ट्रस्तर पर अपना विस्तार कर रहे थे। गुरिल्ला सिद्धांतों के मद्देनजर नक्सलवादी विकास प्रक्रिया में आगे बढ़ते गए।

विभिन्न संगठन :-

1977-में तत्ता परिवर्तन के साथ ही नक्सली आंदोलन का एक नया दौर शुरू हुआ। कोंडापल्ली सीता रमैय्या द्वारा इसकी कमान संभाली गई'' **हिंसा बिना क्रांति संभव नहीं है''** कि विचारधारा वाले सीता रमैया ने गासरूट लेवल तक इसका विस्तार कियां

1981-भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने 13 अन्य गुटों को एकजुट करके (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) इस आंदोलन को उग्र किया।

1972 - चारू मजूमदार की मृत्यु के पश्चात उसके साथी कोंडापल्ली, सीतारमैय्या, के.जी. सत्यमूर्ति और सुनीति कुमार घोष ने दिसम्बर 1972 में **"Central Organisiong Committee"** का गठन किया। इस COC के सदस्य धन प्राप्ति के लिये डकैती तथा लूटमार करते थे तथा इस धन का प्रयोग हथियार खरीदने के लिये करते थे।

1980–कुछ समय पश्चात् **कोंडापल्ली सीथारमैया** ने COC से अपना संबंध तोड़कर 1980 में एक नये संगठन CPI (ML) People war group (PWG) की स्थापना की। धीरे-धीरे इसकी संगठन शक्ति में वृद्धि हुई और PWG देश का सबसे शक्तिशाली संगठन बन गया।

वर्तमान समय में नक्सलवादी आंदोलन भारत की आंतरिक सुरक्षा पर व्यापक प्रभाव डाल रहा है, क्योंकि जिस नक्सलवादी आंदोलन को 80 के दशक के बाद **मृत समझकर** छोड़ दिया गया था, वहीं नक्सलवादी आंदोलन **90** के दशक के बाद के समय में पुनर्जीवित होकर आंतरिक सुरक्षा के लिये प्रमुख समस्या बनकर उभरा है।

वर्ष 2000– नक्सलियों की सुदृढ़ता का स्वरूप 2000 में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं आंध्रप्रदेश में बड़े पैमाने पर देखने को मिला। और इनके द्वारा सुरक्षा बलों से मुकाबला करने के लिये गुरिल्ला आर्मी का गठन किया गया।

वर्ष 2001 – में नक्सलियों ने माओवादी संगठनों के साथ मिलकर एक समन्वयक समिति बनाकर दक्षिण एशिया में आंदोलन उग्र करने का निर्णय लिया और

वर्ष 2004 में पीपुल्स वार ग्रुप PWG और माओवादी कम्यूनिस्ट सेंटर का विलय होने के बाद कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (CPI)M अस्तित्व में आयी। अन्य सभी नक्सली गुटों से भिन्न चुनावों में हिस्सा लेते हुए धीरे-धीरे चुनावों में हिस्सा लेते हुए धीरे-धीरे अपने आप को एक राजनैतिक पार्टी के रूप में ढालने का काम **माकपा (लिब्रेशन)** ने किया।

CPI(M) = (MCC+PWG) दोनों गुटों के एक जूट होने वजह से यह आंदोलन आज मजबूती के शिखर पर हैं इसका मुख्य उद्देश्य भूमि और काबिज़ होना है। इस गुटों की संयुक्त सेना का नाम **PLGA(People Liberation Guerrilla Army)** रखा गया है। इसके ासथ 20 और छोटे बड़े नक्सली संगठन सक्रिय हैं। नक्सलियों ने खुद को आधुनिक गुरिल्ला सेना में तब्दील कर लिया है। देशी हथियारों पर उनकी निर्भरता कम होती जा रही है।

नक्सलवादी नाम से आमतौर पर प्रचलित कम्यूनिस्ट क्रांतिकारियों की इस धारा में दो भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है, जिससे **PWG** नाम से नक्सलवाद की अराजकतावादी विचारधारा है। जिसका प्रचार-प्रसार आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों तक है, जबकि दूसरी प्रवृत्ति भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (ML) को कहा जाता है, जो संसदीय एवं गैर संसदीय संघर्ष को अपना साधन मानती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी विचारधारा से जोड़ने व ग्रुप को सशक्त बनाने के लिए पीपुल्स वार ने 'रैयत कुली संघम' स्थापित किया, जबकि शहरों में सक्रियता बनाए रखने हेतु उन्होंने 'रेडिकल स्टूडेंट यूनियन' तथा 'रेडिकल यूथ लीग संगठन' तैनात किये। इसके साथ ही नागरिक अधिकार संगठन आंध्रप्रदेश 'सिविल लिबर्टी कमेटी' में उसने अपना शक्तिशाली आधार स्थापित कर लिया। सांस्कृतिक क्षेत्र में इस संगठन में 'विप्लवी रचयिता संघम' और 'जन नाट्य मंडली' का गठन करके लोकप्रियता की एक क्रांति उत्पन्न कर दी। इसके फलस्वरूप मध्यवर्गीय युवक एवं गरीब व उपेक्षित वर्ग विशेष रूप से इससे आकर्षित होने लगा और आंध्रप्रदेश के तेलगांना क्षेत्र से लेकर महाराष्ट्र के गढ़चिरोली और चन्द्रपुर तक अपना विस्तार कर लिया। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव परिलक्षित होने लगा। बिहार में विशेष रूप से सक्रिय पार्टी 'यूनिटी ग्रुप' का इस संगठन में विलय हो गया। पीपुल्स वार ग्रुप की तरह बिहार का एक नक्सलवादी गुट (माओवादी कम्युनिस्ट केन्द्र) एम.सी.सी. भी इस समय खास तौर से सक्रिय है।

उत्पीडन की उत्पत्ति नघ्क्सलवाद ने उन्मूलन के लिए खुले संगठनों की आड़ में पीपुल्स वार ग्रुप के तहत अपने छापामार दलों को नियमित सेना की भांति संरचनाओं (फारमेशन) में संगठित कर रखा है। नक्सलियों के नये खुले संगठन न रिवोल्यूशनरी डेमोक्रेटिक फ्रंट (आर.डी.एफ.) समूचे उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, हरियाणा और पंजाब में अपनी पैठ बनाने में है, जिसका मुख्य कार्य बुद्धिजीवियों को माओवादी विचारधारा के आस-पास एकत्र करना है।

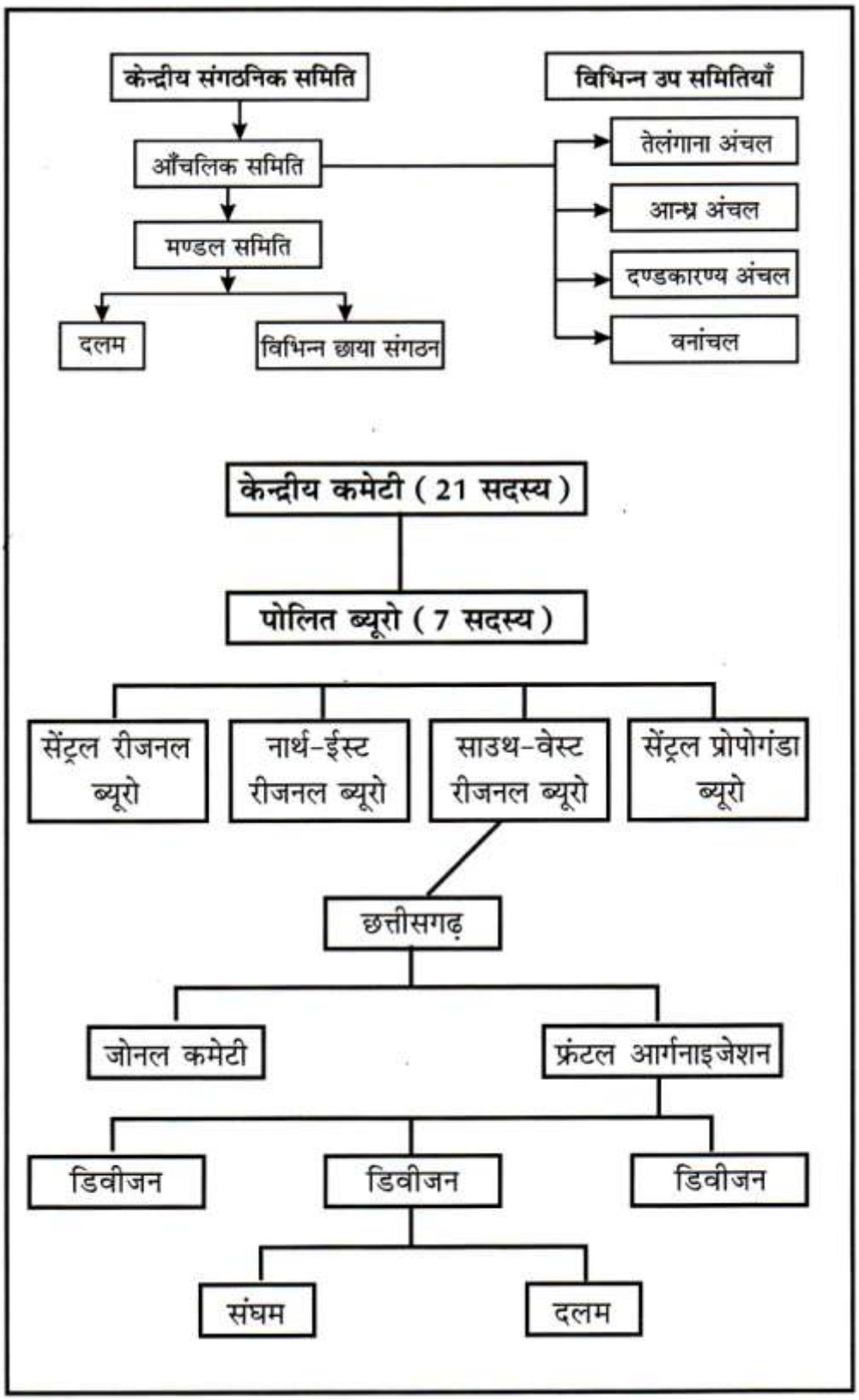
केन्द्रीय संगठनिक समिति
आँचलिक समिति
मण्डल समिति
दलम
विभिन्न छाया संगठन
विभिन्न उप समितियाँ
तेलंगाना अंचल
आन्ध्र अंचल
दण्डकारण्य अंचल
वनांचल
केन्द्रीय कमेटी (21 सदस्य)
पोलित ब्यूरो (7 सदस्य)
सेंट्रल रीजनल ब्यूरो
नार्थ-ईस्ट रीजनल ब्यूरो
साउथ-वेस्ट रीजनल ब्यूरो
सेंट्रल प्रोपोगंडा ब्यूरो
छत्तीसगढ़
जोनल कमेटी
फ्रंटल आर्गनाइजेशन
डिवीजन
डिवीजन
डिवीजन
संघम
दलम

नक्सलवाद के विकास की तीव्रश्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि **वर्ष 2007 से वर्ष 2006** के दौरान अपना सशस्त्र संघर्ष जारी रखने के लिये नक्सलवादियों के पास करीब 60 करोड़ रूपये का बजट था।

इसी दौरान् नेपाल में विजय प्राप्त करने वाले माओवादियों से प्रेरणा लेकर भारत में नक्सलवादियों ने एक घोषणा पत्र जारी किया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि **हम शपथ लेते हैं कि ''कश्मीर, असम, नागालैंड, मणिपुर ओर पूर्वोत्तर के दूसरे हिस्सों में अन्य उत्पीड़ित संगठनों द्वारा चलाए जा रहे सशस्त्र जन आंदोलन में सहभाहगिता करेंगे''।**

माओवादी गतिविधियों के विकास का सारांश

भारत में माओवादी गतिविधियों को निम्न तीन चरणों में विभक्त कर सकते हैं:-

प्रथम चरण (1967 से 1980 तक) :–

मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवाद पर आधारित **''वैचारिक और आदर्शवादी''** आंदोलन का चरण रहा है। इस चरण में नक्सलवादियों को ''धरातलीय अनुभव तथा अनुमान का अभाव'' रहा है। इस चरण में नक्सलियों को ''राष्ट्रीय पहचान'' मिली परंतु राष्ट्रीय प्रभाव डालने से असमर्थ रहे।

इस चरण का मुख्य कार्यक्षेत्र :–

(1) नक्सलवादी, फासीदेवा, सिलीगुड़ी (पं. बंगाल)

(2) लीलाकूलम (आंध्रप्रदेश)

(3) बीरभूम (पं. बंगाल)

(4) देबरा - गोपीवल्लभपुर (पं. बंगाल)

(5) मुशहरी (बिहार)

(6) लखीमपुर - खीरी (उ.प्र.)

18 मार्च 1967 से जारी इस सशस्त्र गतिविधि को 1971 तक सुरक्षा बलों को ध्वस्त कर दिया। इसके बचे नेताओं को भूमिगत होकर कार्य करना पड़ रहा था। आपातकाल के दौरान् नक्सली आंदोलन खत्म हो गया था। इसके अधिकांश नेता जेल में बंद हो चुके थे।

दूसरा चरण (1980 से 2004 तक) :–

धरातलीय अनुमान, आवश्यकता और अनुभव के आधार पर चलने वाला क्षेत्रीय नक्सली गतिविधियों का दौर था। इस चरण व्यवहारिक विकास किया गया। इस

चरण में नक्सलियों को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली तथा अपने गतिविधि से क्षेत्रीय स्तर में प्रभाव डालने में समर्थ हो गए थे।

इस चरण का मुख्य कार्यक्षेत्र बिहार, आंध्रप्रदेश और दंडकारण्य रहा हैं इस चरण में प्रमुख नक्सली संगठन :-

(i) CPI(ML) लिबरेशन,

(ii) CPI (ML) पार्टी युनिटी

(iii) CPI (ML) PWG

इसके अतिरिक्त दर्जनों अन्य नक्सली संगठन भी देश के विभिन्न हिस्सों मं संगठित हो रहे हैं।

PWG ने आंध्रप्रदेश में उत्तरी तेलंगाना और मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ वनक्षेत्रों को जोड़ते हुए दण्डकारण्य जोन बनाकर गुरिल्ला युद्ध को प्रारंभ किया। PWG ने लिट्टे से संबंध बनाकर वर्ष 1989 में बारूदी सुरंग बनाना तथा उनके उपयोग में महारथ हासिल किया। इसके बाद नक्सली सुरक्षाबलों पर भारी पड़ते चले गए। वर्ष 1990 के बाद नक्सली कमान सीथारमैय्या के स्थान पर मुपल्ला लक्ष्मण राव के हाथों में आ गया।

दूसरे चरण में देश भर में सक्रिय दर्जनों नक्सली संगठन को बड़े-बड़े संगठनों ने दबा दिया और खत्म कर दिया। **वर्ष 1998 में** PWG ने बिहार के **पार्टी युनिटी** के साथ एकीकरण कर लिया। तथा इस एकीकृत संगठन ने वर्ष 2004 में दूसरे बड़े नक्सली समूह MCC के साथ विलय कर एक शक्तिशाली संगठन **माकपा (माओवादी)** बनाया।

तीसरा चरण - (2004 से जारी)

इस चरण में नक्सलियों का ''राष्ट्रीय स्वरूप'' उभरा, ''विदेशी संपर्क'' बढ़े और राष्ट्र की ''सबसे बड़ी आंतरिक चुनौती'' बना।

इस चरण में नक्सली गुरिल्ला युद्ध को ''मोबाईल युद्ध में बदलने लगा है। आधार क्षेत्र को विस्तार का ''मुक्त क्षेत्र'' बनाने लगे हैं। जहां ''जनता सरकार'' स्थापित कर रहे हैं। इस चरण में नक्सली अपने लड़ाकू दस्तों को सैन्य संगठन में बदल रहे हैं। अब तक कंपनी स्तर की सेना खड़ी कर चुकी हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार यदि नक्सलवादियों के ठिकानों को समाप्त नहीं किया गया तो ये नक्सली वर्ष 2010 तक छ.ग. की कुल भूमि का 60% भाग को अपने कब्जे में कर लेंगे।

माओवादियों के लक्ष्य :–

- काश्मीर, असम, नागालैंड, मणिपुर और पूर्वोत्तर राज्यों के अन्य भागों में तैनात अलगावादी व उग्रवादी संगठनों द्वारा चलाये जा रहे जन आंदोलन में सहभागिता अधिक से अधिक निभाई जाये।
- भारतीय अर्थव्यवस्था व राजनीतिक केन्द्रों पर सरलता के साथ आक्रमण करने का आधारतंत्र लक्ष्य के अनुसार बनाया जाये।
- एक गोपनीय पार्टी तंत्र बनाया जायेगा जो गुप्त एवं अपराजेय होने के साथ ही जिसमें मजदूर, किसान एवं विद्यार्थियों की अधिक से अधिक सहभागिता की जायेगी।
- वर्ग संघर्ष के नाम पर माओवादी गुरिल्ला उग्रवादी संगठन तैनात किये जायेंगे जो अपना निशाना शहरी क्षेत्रों को बनायेंगे।
- बस्तर के जंगल में माओवादी प्रशिक्षण देकर इस क्षेत्र से गुरजने वाली बड़ी शक्ति शाली विद्युत आपूर्ति व्यवस्था को ठप्प करके इस क्षेत्र के सभी चार जिलों को अंधेरे में डालना चाहते हैं।

- माओवादी राष्ट्रीय खनिज विकास संगठन की सुरंग, इस्सार प्लांट, तथा रेल्वे को ध्वस्त करने की फिराक में लगे हुए हैं।
- उपरोक्त सभी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संवेदनशील स्थानों को अपना टारगेट बनान शुरू करना होगा।
- विभिन्न कम्युनिस्ट संगठनों एवं शक्तियों के साथ मित्रतापूर्ण बनाकर अपना अभियान चलाना।

प्रमुख नक्सली नेता :–

पोलित ब्यूरो सदस्य मिसिर बेसरा उर्फ भास्कर उर्फ सुनीरमल को जब झारखंड में गिरफ्तार किया तो उसने माओवादी टॉप लीडरों का रहस्योद्‌घाटन किया। उसके अनुसार पोलित ब्यूरो के सदस्य प्रमुख रूप से इस प्रकार से हैं –

1. **मुपाला लक्ष्मण राव** – यह पार्टी का प्रमुख नेता करीमनगर जिले का निवासी विज्ञान स्नातक व 58 वर्ष की आयु का है। इसको गनपथी, रमन, श्रीनिवास व मलन्ना आदि 15 उपनामों से भी जाना जाता है।
2. **प्रशान्थ बोस** – यह पार्टी का दूसरे नंबर का प्रमुख नेता है, इसे निर्भय, महेश व काजल आदि उपनामों से जाना जाता है। पश्चिम बंगाल निवासी यह नेता भारतीय क्रांतिकारी संगठनों की अंतर्राष्ट्रीय बैठकें आयोजित करने में सक्रिय भूमिका निभाता है।
3. **चेरूकोरी राजा कुमार** – आंध्रप्रदेश के करीमनगर जिला निवासी यह माओवादी नेता था, जिसे उदय परिमल और आजाद आदि उपनामों से जाना जाता था, जो आंध्रप्रदेश पुलिस एनकाउंटर में मारा गया।
4. **मल्लोजुला कोटेश्वर राव** – यह पचपन वर्षीय माओवादी नेता भी आंध्रप्रदेश के करीमनगर जिले का रहने वाला था। इसे प्रहलाद, रामजी तथा किशन जी उपनामों से भी जाना जाता है। यह पीपुल्स वार ग्रुप (पी.डब्ल्यू.जी.) तथा

माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर के विलय का उत्तरदायित्व निभाया। पूर्व में यह बंगाल क्षेत्र का निरीक्षण कार्य संभाल रहा था।

5. **नम्बल केशवराव** – आंध्रप्रदेश के श्रीकाकूलम जिला निवासी यह माओवादी नेता लगभग 53 वर्ष का है, जिसे गंगन्ना व बसवराज के उपनामों से भी जाना जाता है।

6. **कोबड़ गांधी** – यह पार्टी के प्रचार व प्रसार का केन्द्रीय प्रभारी है और पार्टी हेतु दस्तावेजों को तैयार करता है। इसे सलीम, राजन तथा किशोर आदि उपनामों से जाना जाता है।

7. **प्रमोद मिश्रा** - बिहार राज्य के औरंगाबाद जिला निवासी इस नेता को बन बिहारी तथा जनार्दन आदि उपनामों से भी पुकारा जाता है। इसके पास दिल्ली, पंजाब, हरियाणा व जम्मु-काश्मीर का प्रभार है।

8. **सुमानन्द सिंह** – 55 वर्षीय बिहार राज्य निवासी इस माओवादी नेता को सुजीथ दा तथा सुमन उपनामों से भी जाना जाता है। यह पश्चिमी बंगाल में सैनिक कार्यवाही करने का प्रभारी है। सैन्य-संक्रियाओं का यह एक विशेषज्ञ कहा जाता है।

9. **मल्लाराजी रेड्डी** - यह 55 वर्षीय माओवादी नेता आंध्रप्रदेश के करीमनगर जिले का निवासी है। इसे मीसलन्ना, सयाना तथा सथेन्ना उपनामों से भी जाना जाता है।

10. **मल्लाजुला वेणुगोपाल** – माओवादी इस नेता को भूपति व सोनू उपनामों से भी संबोधित किया जाता है। यह आंध्रप्रदेश के करीमनगर का निवासी है।

11. **कटकम सुदर्शन** – इस माओवादी नेता को आनंद, मोहन तथा विरेन्द्र आदि उपनामों से भी जाना जाता है। 50 वर्षीय यह नेता आंध्रप्रदेश के आदिलाबाद जनपद का निवासी है।

12. **अखिलेश यादव** – पोलित ब्यूरो के इस सदस्य को प्रबोध, रमनाजी तथा भूपेश उपनामों से भी संबोधित किया जाता है। 65 वर्षीय यह नेता पूर्व अध्यापक एवं वरिष्ठतम सदस्यों में से एक है। बिहार के गया जिले के निवासी इस सदस्य का पुत्र भी माओवादी संगठन में शामिल है।

13. **बलराज** – 50 वर्षीय इस पोलित ब्यूरो सदस्य को बी.आर. के नाम से भी लोग जानते हैं। यह उत्तरी बिहार के माओवादी साहित्य के प्रकाशन के प्रति पूर्ण रूप से उत्तरदायी है अथवा प्रभारी है।

14. **आशुतोष** – 45 वर्षीय इस पोलित ब्यूरो के सदस्य को विपुल और अशोक के नाम से भी जाना जाता है। यह झारखंड राज्य का मूलरूप से रहने वाला है। बेसराज की गिरफ्तारी के बाद से यह सबसे बड़ा ग्रुप लीडर बनकर उभरा है।

छत्तीसगढ़ के हार्डकोर नक्सली

1. **गोपन्ना** : बस्तर में सक्रिय था। गरियाबंद जिले के आमगांव इलाके से पकड़ा गया था। उत्तर बस्तर रीजनल कमेटी से उसे गरियाबंद इलाके में बसै तैयार करने के लिए भेजा गया था। दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का सदस्य था।

2. **शांतिप्रिया उर्फ मालती** : नक्सलियों के सीनियर लीडर गुड़सा उसेंडी की पत्नी, रायपुर और भिलाई में उसे अरबन नेटवर्क तैयार करने का जिम्मा दिया गया था। सिटी कोऑर्डिनेटर की पोस्ट थी। सीपीआई माओवादी में।

3. **निर्मलक्का ऊर्फ विजय लक्ष्मी** : पश्चिम बस्तर में सक्रिय थी। क्रांतिकारी आदिवासी महिला संघ की अध्यक्ष। वेल्लूर अस्पताल से इलाज करवाकर लौटते समय 2007 में उसे पचपेढ़ीनाका रायपुर में पकड़ा गया था। डीएसजेके की अल्टरनेटिव मेंबर थी।

4. **देवपाल चंद्रशेखर रेड्डी** : निर्मलक्का का पति। नक्सलियों की प्रिंटिंग प्रेस का इंजार्च था। बस में बस्तर जाते समय निर्मला के साथ गिरफ्तार।

5. **मीना चौधरी :** नक्सलियों के रायपुर और भिलाई में फैले अरबन नेटवर्क का हिस्सा थी। रायपुर में जब्त हथियार-विस्फोटकों के मामले में उसे मालती के साथ पकड़ा गया था।

6. **असित कुमार सेन :** नक्सली साहित्य छापने के आरोप में 2007-08 में टिकरापारा, रायपुर में उसे पकड़ा गया था।

7. **कोरसा सन्नी :** मरकाम सन्नी : इनके रिकार्ड पुलिस खंगाल रही है।

(स) नक्सलवाद का विस्तार

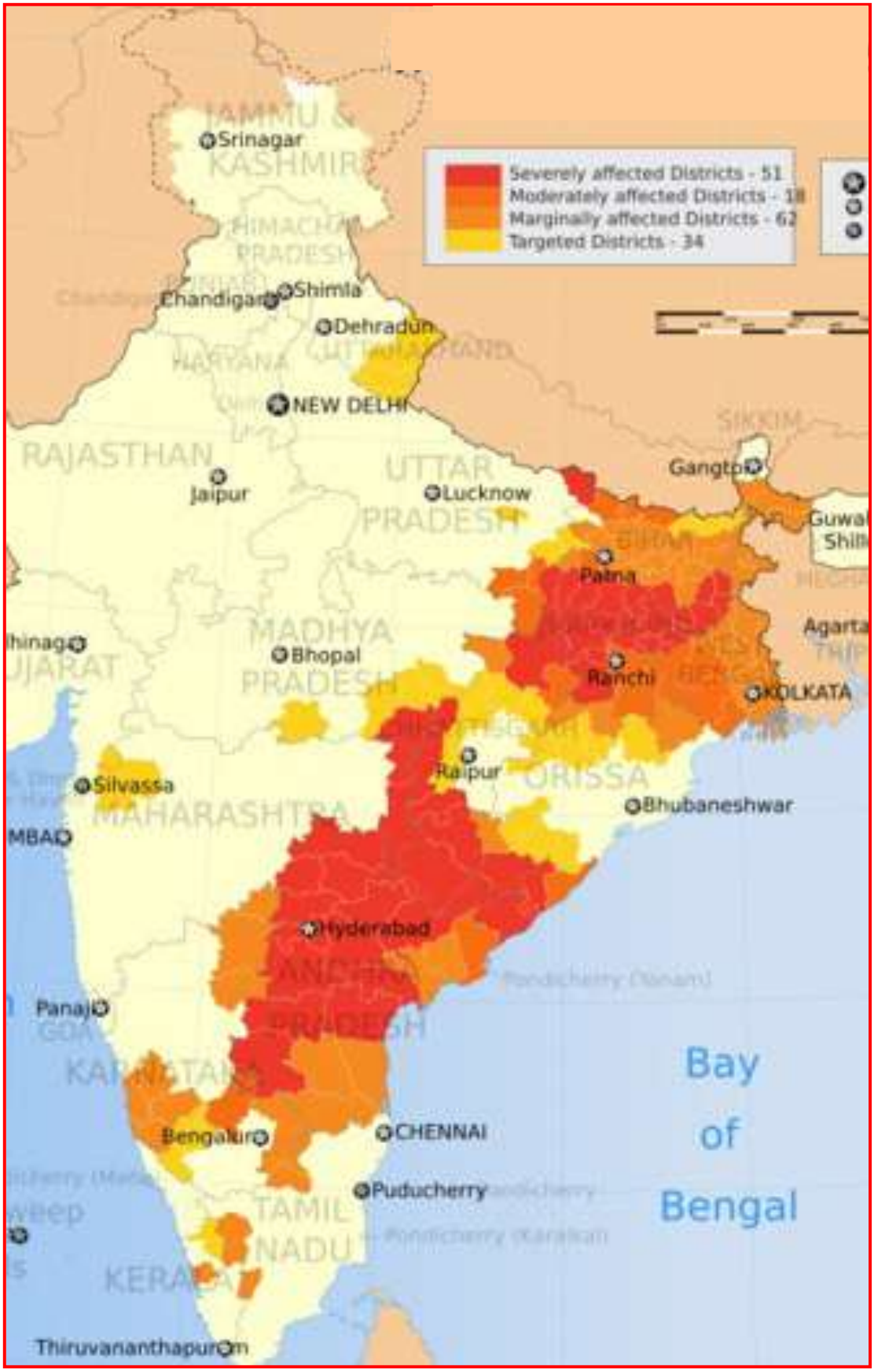

भारत के नक्शे में नक्सल प्रभावित राज्य

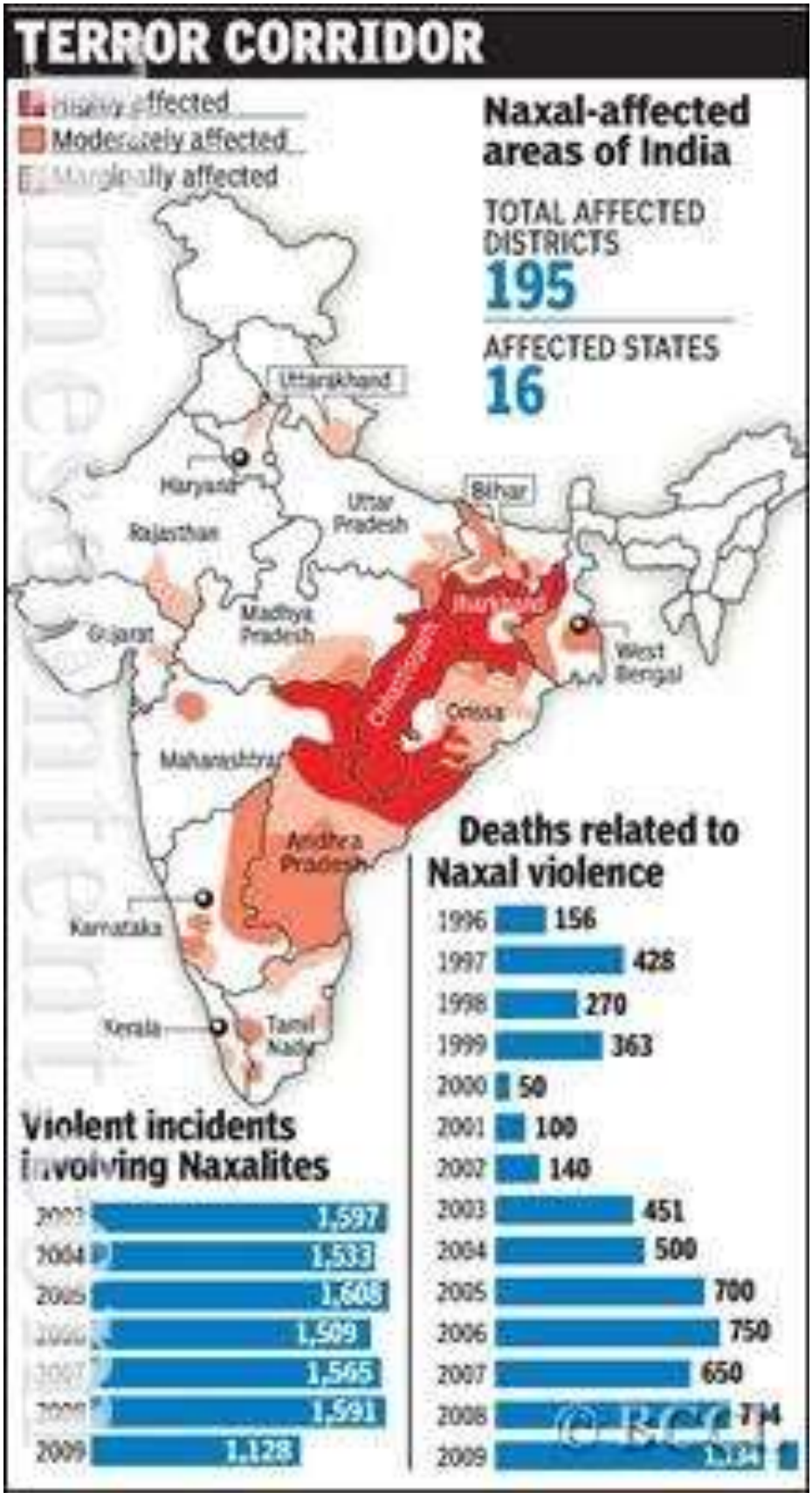

Naxal Affected areas of India

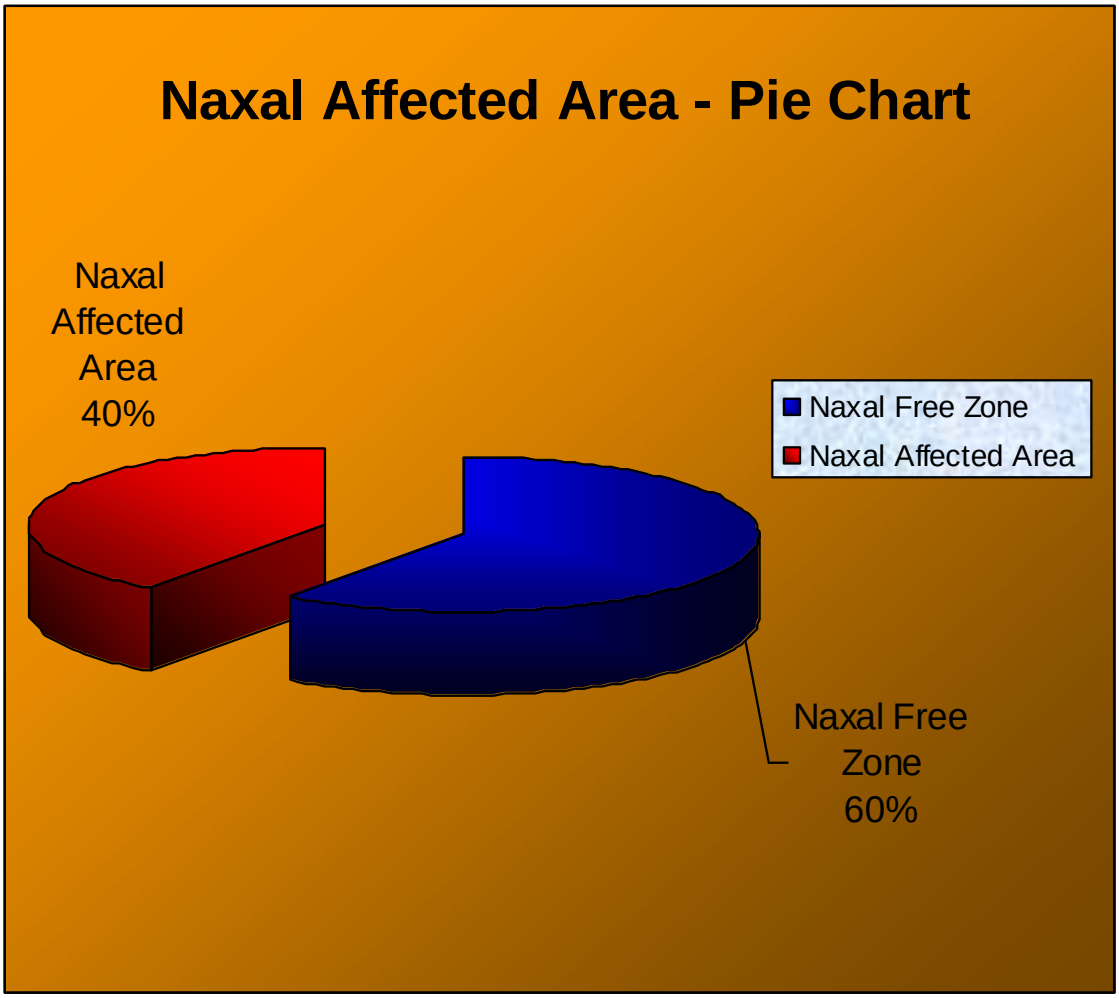

Pie Chart of Naxal Affected areas

विस्तार

भारत की पहचान विश्व पटल पर एसे सांस्कृतिक विभिन्न वाले देश की है, जहां पर विभिन्न धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों के लोग सद्भावना के साथ रहते हैं। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के 63 वर्षों के बाद भी राष्ट्रीय एकता की छवि धुंधली-सी प्रतीत होती है, क्योंकि आज भी हमारे देश में आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, पृथकवाद आदि अनेक विघटनकारी प्रवृत्तियाँ अपना सर उठाये खड़ी है, जो भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिये चुनौती पेश कर रही हैं। आंतरिक सुरक्षा से हमारा तात्पर्य हिंसात्मक अराजकता एवं विघटनकारी शक्तियों से देश की स्थिरात, अस्तित्व एवं स्थायित्व की रक्षा करने से है। किसी भी देश की सुरक्षा का यदि विश्लेषण करना हो तो उसमें आंतरिक खतरों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिसे कोई भी राष्ट्र नजरअंदाज नहीं कर सकता।

- विगत कुछ वर्षों के पूर्व नक्सलवाद को एक क्षेत्रीय समस्या के रूप में जाना जाता था, किन्तु अब यह एक राष्ट्रीय समस्या का रूप धारण कर चुका है।
- वर्तमान समय में नक्सलवाद भारत के लगभग 13 राज्यों के 170 जिलों और 45 करोड़ से ज्यादा जनसंख्या एवं 40% भू-भाग के क्षेत्रों में फैल चुका है और लगातार अपने क्षेत्रों को बढ़ाता जा रहा है।
- जिस नक्सलवादी आंदोलन को 80 के दशक में मृत समझकर छोड़ दिया गया था, वहीं 90 के दशक में पुनर्जीवित होकर आंतरिक सुरक्षा के लिये प्रमुख समस्या बनकर उभरा।
- 1990 तक नक्सलवादियों की पैंठ केवल 4 राज्यों (बिहार, मध्यप्रदेश, उडीसा, आंध्रप्रदेश के 15 जिलों तक सीमित थी।) लेकिन सन् 2003 तक आते आते इनका प्रसार 9 राज्यों के 55 जिलों तक हो गया। इसके बाद प्रसार में जर्बदस्त तेजी देखने को मिली और 2004 तक आते-आते 13 राज्यों के 156

जिलों में इनकी पकड़ हो चुकी थी। आज समस्या यह है कि देश के 28 राज्यों में से 20 राज्य और 602 जिलों में से 223 जिले नक्सलवादी आंदोलन से प्रभावित हैं। देश 9 राज्यों के 55 जिलों में नक्सलवादियों की समानान्तर सत्ता स्थापित है। इन राज्यों में किसी भी प्रकार की नक्सली वारदात कभी भी घटित हो सकती है।

अति नक्सल प्रभावित 9 राज्यों के 55 जिलों की सूची :-

क्र.	राज्य	अति नक्सल प्रभावित जिले
1.	आंध्रप्रदेश	वारंगल, करीमनगर, आदिलाबाद, खम्मम, मेडक, नालगोडा, निजामाबाद ओर महबूबनगर।
2.	बिहार	औरंगाबाद, गया, जहानाबाद, रोहतास, नालंदा, पटना, भोजपुर, कैमूर।
3.	झारखण्ड	हजारीबाग, लोहरदगा, पलामू, चतरा, गढ़वा, रांची, तामला, सिमेडगा, लातेहर, गिरीडीह, कोडरमा, बोकारो और धनबाद।
4.	उत्तरप्रदेश	सोनभद्र, मिरजापुर, चंदौली
5.	मध्यप्रदेश	बालाघाट और डिंडोरी
6.	छत्तीसगढ़	बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, राजनांदगांव, सरगुजा, जशपुर, गरियाबंद, कोरिया, कोण्डागांव, सुकमा, धमतरी, महासमुंद, नारायणपुर, बीजापुर,
7.	उड़ीसा	मलकानगिरी, गंजाम, कोरापुट, गजपति, रायगढ़ा, नवरंगपुरा और मयूरगंज
8.	महाराष्ट्र	गढ़चिरोली, चन्द्रपुर, भंडारा और गोंदिया।
9.	पं. बंगाल	बाकुंडा, मिदनापुर, पुरूलिया

विभिन्न वर्षों में विस्तार संबंधी आंकड़े :-

क्र.	वर्ष	राज्य	जिले
1.	1990	4 राज्यों (बिहार, म.प्र., उडीसा, आं. प्र.)	15 जिलों
2.	2003	9 राज्यों	55 जिलों
3.	2004	13 राज्यों	156 जिलों
4.	2004 के बाद से	20 राज्यों	602 जिलों 55 जिलों में समानंतर सत्ता स्थापित है।

5. नक्सलवादी आंदोलन सुदूर गांवों में फैले एसे आंतक का नाम है, जिसे क्रांति की परत चढ़ा दी गई है। यह एक उदार देश की सहृदयता का पूरी तरह गलत फायदा उठाने वाला यह आंदोलन हत्या करने वाले सबसे बड़े तंत्र के रूप में विकसित हो चुका है।

6. नक्सलियों की सुदृढ़ता का स्वरूप सन् 2000 में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड एवं मध्यप्रदेश में बड़े पैमाने पर देखने को मिला। असंवेदनशीलता आदि कारणों से यह आंदोलन भारत के 40% भौगोलिक क्षेत्र में पैर पसार चुका है।

7. भारतीय खुफिया एजेंसी **"रॉ"** के अनुसार **20,000** हथियारबंद नक्सली देश में कार्यरत है तथा इन्हीं लोगों ने 50 हजार नक्सली कैडरों को प्रेरित और प्रशिक्षित किया है।

8. पुलिस और केन्द्रिय सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार नक्सलवाद जो कि एक जन आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था। आज संगठित अवैध वसूली पर आधारित **(लेवी) 15 सौ करोड़** का साम्राज्य बन गया है।

9. लेवी द्वारा धन प्राप्त कर वे अत्याधुनिक हथियारों से अपने तंत्र को मजबूत कर रहे हैं। नक्सलवादियों को भारत के पड़ोसी राष्ट्र- नेपाल, चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा म्यांमार, से हथियार तथा आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है।

10. जहां एक ओर अबुझमाड़ के जंगलों में खुलेआम नक्सलियों के शिविर चल रहे हैं तो दूसरी ओर केरल के जंगलों में ISI की मद्द से इन्हें प्रशिक्षित करने की सूचनाऐं हैं, जहां इनसे जुड़े लोगों को सुरक्षा बलों के खिलाफ लड़ने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ज्ञातव्य हो कि ISI पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी है। भारत के बड़े शहर एवं नेता इसके निशाने पर हैं। पाक ISI एजेंटों को नेपाल के रास्ते भेज रहा है। क्योंकि इन पड़ोसी देशों मे वीज़ा की अनिवार्यता लागू नहीं।

11. जिस देश के 7 **राज्यों** में से **4 प्रदेशों** में पूरी तरह नक्सलियों की तूती बोल रही हो, वहां नक्सलविरोधी ऑपरेशन पिछले एक दशक से केवल लकीर पीटकर रह गए और हासिल हुआ तो सिर्फ नक्सलियों की संगठित और ताकतवर क्षमता।

12. फिलहाल पूर्व के साथ दक्षिण के राज्यों में भी खासा असर देखने में आ रहा है।

15 राज्यों के 170 नक्सलग्रस्त जिलों में से - 51 जिले - गंभीर
- 18 जिले - मध्यम
- 62 जिले - आंशिक
- 34 जिले - मामूली रूप

से ग्रस्त हैं। उल्लेखनीय है कि देश के कुल क्षेत्रफल का 35-40% हिस्सों में नक्सलियों की मौजूदगी कायम हैं 92000 वर्ग किलोमीटर के विशेष क्षेत्र जिसे नक्सली रेड कॉरिडोर कहते हैं में नक्सलियों की सक्रियता ज्यादा है।

13. उड़ीसा, पं. बंगाल, बिहार, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश के राज्य नक्सलियों से ज्यादा प्रभावित हैं। गुप्तचर संस्था ''रॉ'' के मुताबिक नक्सलियों की दंभ ने 20,000 सशस्त्र कैडर एवं 50,000 नियमित कैडर मौजूद हैं।

14. नक्सलियों को जंगल के रास्तों का पूरा ज्ञान होता है, तो क्षेत्रीय लोगों का समर्थन भी, जो इन्हें दूर्गम जंगलों में विस्तार के दृष्टिकोण से काफी मदद करते हैं।

15. अपनी भारी तादाद में विस्तार करके ''लिबरेटेड जोन'' बनाते हैं। यही वजह है कि दंतेवाड़ा, बीजापुर, नारायणपुर जिलों में नक्सलियों की तादाद ज्यादा होने के कारण ही वह सुरक्षा बलों को आसानी से अपना शिकार बनाने में सफल होते हैं।

16. माओवादी खतरे के व्यापक विस्तार को इस रूप में भी समझा जा सकता है कि जहां जम्मू-काश्मीर में सेना को लगभग 3000 आतंकवादियों से जूझना होता था वहीं माओवादी संख्या व क्षमता बल में अप्रत्याशित रूप से बहुत अधिक है।

17. नक्सली गतिविधियाँ जिस तरह से व्यापक रूप ले रहीं है। उससे उबरने के लिये गरीबी और पिछड़ापन ही उत्तरदायी नहीं बल्कि बाहरी समर्थन नक्सलियों के लिये खाद पानी का काम कर रहा है।

. पाक का प्रयास यही है कि यदि उसका कार्य नक्सली कर दें तो उसे आतंकवादी भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

18. यदि देखा जाए तो नक्सलवाद विशेष रूप से उन्हीं क्षेत्रों में फैला हुआ है जो स्वाधीनता के बाद सामाजिक एवं आर्थिक रूप से देश की मुख्यधारा से कट गए।

19. नक्सलवाद के प्रार्दुभाव एवं क्रमिक प्रसार पर निगाह डालने से इसके बुनियादी कारणों का सहज आभास हो जाता है।

20. केंद्रिय गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि नक्सलवादियों के ठिकानों को समाप्त नहीं किया गया तो नक्सली आगामी वर्षों में कुल छ.ग. की भूमि के 60% भाग को कब्जे में कर लेंगे।

21. **संगठित रंगदारी व्यवसाय** – जनआंदोलन से आरंभ हुआ नक्सलवादी अभियान अब वसूली या लेवी के रूप में लगभग 1500 करोड़ रूपये का संगठित रंगदारी व्यवसाय कर रहा है। इस बात का रहस्योद्घाटन सुरक्षा बलों और पुलिस द्वारा नक्सलियों के नेताओं के पास से मिले साहित्य एवं दस्तावेजों से हुआ। इस संदर्भ में प्रस्तुत है। प्रमुख तथ्य जो इस प्रकार हैं :-

I. भाकपा (माओवादी) झारखंड में अब भी प्रमुख नक्सली समूह पर छिटपुट समूहों ने भी अपहरण, लूटपात व मादक पदार्थों की तस्करी के अलावा 'लेवी' लगाने का काम शुरू किया। इसके तहत राज्य से सालाना तीन अरब रूपये की वसूली।

II. नक्सलवाद से सर्वाधिक प्रभावित झारखंड, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, बिहार, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र से 'लेवी' से सालाना करीब 1500 करोड़ रूपये की आमदनी।

III. दस्तावेजों से मिलते हैं ठेकेदारों, पेट्रोल पंप मालिकों व भू-स्वामियों से वसूली गई लेवी राशि के सही आंकड़े।

IV. सड़क परियोजना में 10 फीसद तो छोटे पुलों व अन्य परियोजनाओं में पांच प्रतिशत लेवी वसूली जाती है।

V. वाम विचारधारा वाले चरमपंथी समूह क्षेत्रीय उद्योगपतियों से भी धन वसूलते हैं और इसकी रसीद भी जारी करते हैं।

VI. सीआरपीएफ के मुताबिक राज्य में वाम विचारधारा से जुड़े छह चरमपंथी समूह सक्रिय हैं। पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया ज्यादातर अपराधियों से बना हैं इसको पहले झारखंड लिबरेशन टाइगर्स कहा

जाता था। ये समूह लंबे समय तक विचारधारा के लिए नहीं बल्कि रंगदारी के लिए काम करते हैं।

VII. धन के लिए नक्सली ही ठेकेदारों से संपर्क नहीं साधते बल्कि ठेकेदार भी खुद धन के साथ नक्सलियों से संपर्क करते हैं।

VIII. झारखंड के डीजीपी वीडी राम कहते हैं, ठेकेदार सड़कों को विस्फोट से उड़वाने के लिए नक्सलियों से संपर्क करते हैं क्योंकि सड़कों को नक्सली उड़ा देगे तो गुणवत्ता की जांच नहीं हो पाएगी।

IX. माओवादी नेता सुख-सुविधाओं के साथ ऐशोआराम की जिंदगी जीते हैं वे अपने संगठन में दूसरों के बच्चों की जबरन भर्ती करते हैं लेकिन खुद के बच्चों को पब्लिक स्कूल में पढ़ाते हैं।

X. माओवादी पूर्वोत्तर राज्यों के विद्रोहियों की तरह ग्रामीणों को अफीम की खेती के लिए उकसाते हैं। 2007 में देशभर में बरामद 1.07 लाख किलोग्राम गाँजे में सक 15 हजार 498 किलोग्राम नागालैंड से, 14 हजार 815 किलोग्राम मध्यप्रदेश से, 12 हजार 551 किलोग्राम महाराष्ट्र से, सात हजार 470 किलोग्राम छत्तीसगढ़ से व सात हजार 59 किलोग्राम गांजा आंध्रप्रदेश से बरामद हुआ था।

मजबूत होते नक्सली :-

I. नक्सली हर साल 320 करोड़ रूपये की उगाही करते हैं, जो कि राज्यों के राजस्व का दस प्रतिशत है।

II. राज्य में दस हजार से अधिक नक्सली सक्रिय, जिनके पास बीस हजार से अधिक आधुनिक हथियार है।

III. राज्य सरकार हर साल 20 करोड़ रूपये विशिष्ट लोगों की सुरक्षा पर खर्च करती हैं। जबकि राज्य के एक व्यक्ति पर सरकार का खर्च मात्र 144 रूपये हैं।

IV. नक्सलियों से निपटने के लिए 'कोबरा' यानी काम्बैट बटालियन फार रिजाल्यूट एक्शन का दस बटालियन गठित करने का फैसला।

V. इस योजना पर केन्द्र सरकार के 1389.47 करोड़ रूपये खर्च होंगे।

हाईटेक बनता नक्सलवाद –

बिहार, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड तथा उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत बनाने के बाद माओवादी नक्सलियों की नजर अब देश के शहरी क्षेत्रों पर है। वह इसके लिए ई-मेल तथा इंटरनेट की अन्य सुविधाओं का सहारा ले रहे हैं। भारत के सभी महत्वपूर्ण शहरों में लोगों को (विशेष तौर पर युवाओं) अपने मिशन में शामिल करने के लिए माओवादी इन्हें ई-मेल भेज रहे हैं। इसके लिए उन्होंने याहू पोर्टल पर अनेक समूह बनाये हैं। शहरी क्षेत्रों में लोगों को अपने मिशन में शामिल करने के लिए संदेश भेजने के लिए बड़ी संख्या में ई-मेल का एक डाटा बैंक तैयार किया गया है। इसके माध्यम से नक्सली साहित्य, मार्क्स तथा लेनिन के विचार, सशस्त्र गतिविधियों संबंधी सूचना तथा भविष्य में आंदोलन की रूपरेखा लोगों तक पहुंचाई जा रही है।

नक्सल विस्तार में सहायक
पड़ोसी राज्य/वैश्विक परिदृश्य नक्सल विस्तार

नक्सलवादियों का उग्रवादी संगठनों से गठजोड़ ने इस समस्या को और अधिक बढ़ा दिया है। एसे सूचनाऐं भी प्राप्त हुई हैं कि पीपुल्स वार के कैडरो को हथियारों तथा 'इंप्रोवाइज्ड़ एक्सप्लोसिव डिवाइस' के संचालन का प्रशिक्षण लिट्टे के कुछ भूतपूर्व कैंडारों द्वारा दिया गया है।

आई-एम-

उनका नागालैंड के ''नेशनल सोशलिस्ट काउसिंल'' (आई.एम.) के साथ भी एक दुसरे के लक्ष्यों को समर्थन देने को लेकन समझौता है।

उल्फा -

'कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी- लेनिनवादी) पार्टी यूनिटी के कुछ दस्तां को उल्का द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

नेपाल-

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) की नेपाल की कम्यूनिस्ट पार्टी के साथ भी एक तरह की रणनीति सहमति है।

कंपोसा -

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) के गठन से पूर्व देश में सक्रीय माओवादी कम्यूनिस्ट सेंटर (MCC) तथा पीपुल्स वार ग्रुप (PWG) 'कोआर्डिनेशन' कमेटी ऑफ माओइस्ट पार्टी एंड आर्गिनाइजेशन ऑफ साउथ एशिया (कंपोसा) के सदस्य थे।

कंपोसा एशिया में सक्रीय माओवादियों का मंच है। अंतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण ही एक-दूसरे के जाने के दूश्मन नक्सली संगठन MCC और PWG के बीच एकता स्थापित हुई।

अमेरिका – नक्सलियों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय समर्थन के लिये विश्व स्तर पर कई दौर की वार्ताएं हो चुकी हैं और जल्द ही अमेरिका में सक्रिय माओवादी संगठनों के बीच बातचीत होने वाली है।

भारत में सक्रीय नक्सलियों से जिन देशों के नेताओं के संपर्क है, उनमें जर्मनी, पेरू, तुर्की, नार्वे, जापान, मैक्सिकों, सैनेगल, स्पेन, रूस, बेल्जियम, फिलीपींस, अर्जेंटिना, कोलंबिया व चिली है।

नक्सलियों के अनुसार स्वीडन हेवी व ब्रिटेन में कार्यरत श्रमिक संगठनों से भी बातचीत चल रही है। जल्द ही कोई परिणाम निकलने की संभावना है। हाल में (मार्च 2012) नक्सवादियों के पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी से साठगांठ होने के पुख्ता प्रमाण मिले हैं।

भारत में नक्सली समर्थक/माओवाद समर्थक पड़ोसी राज्य

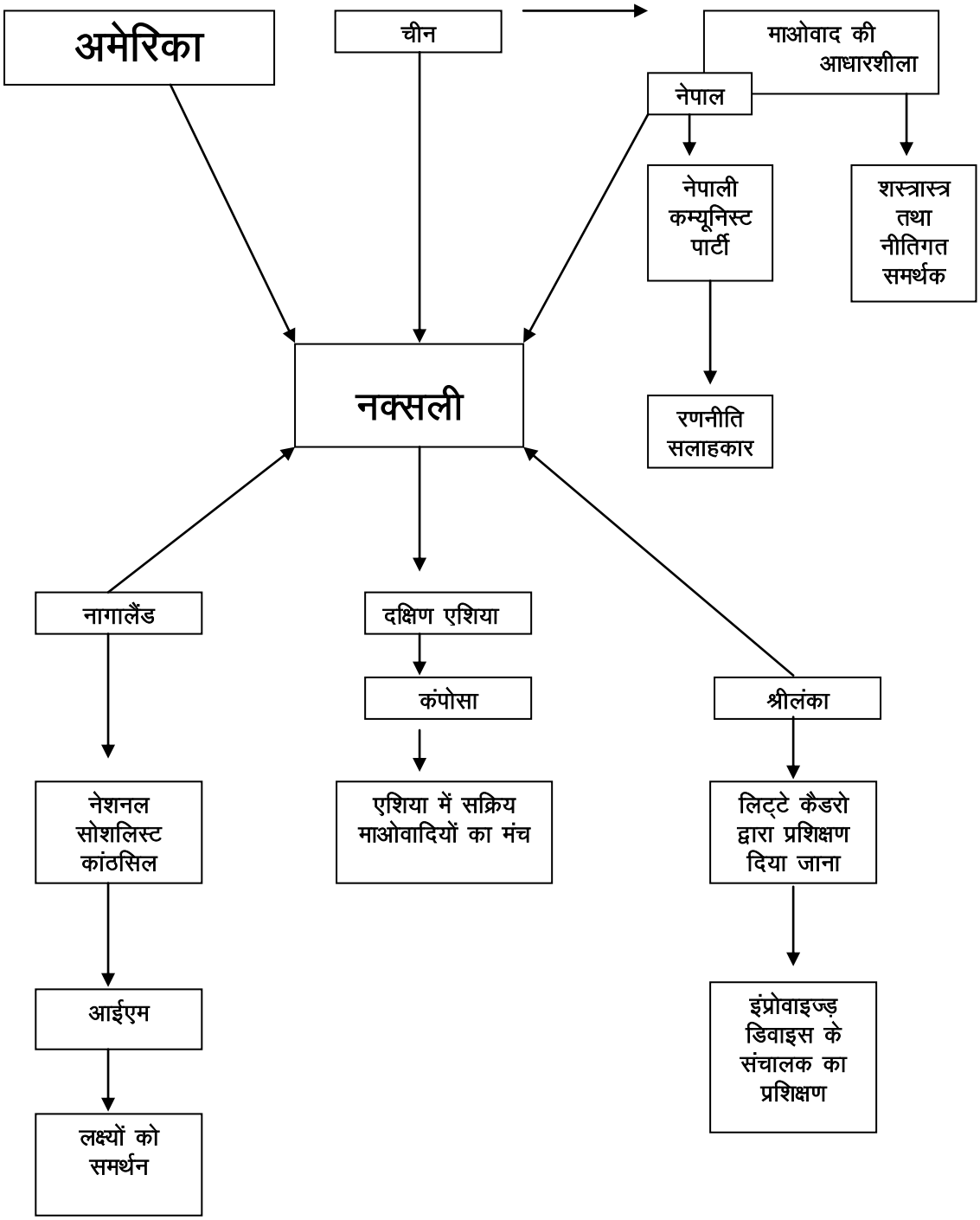

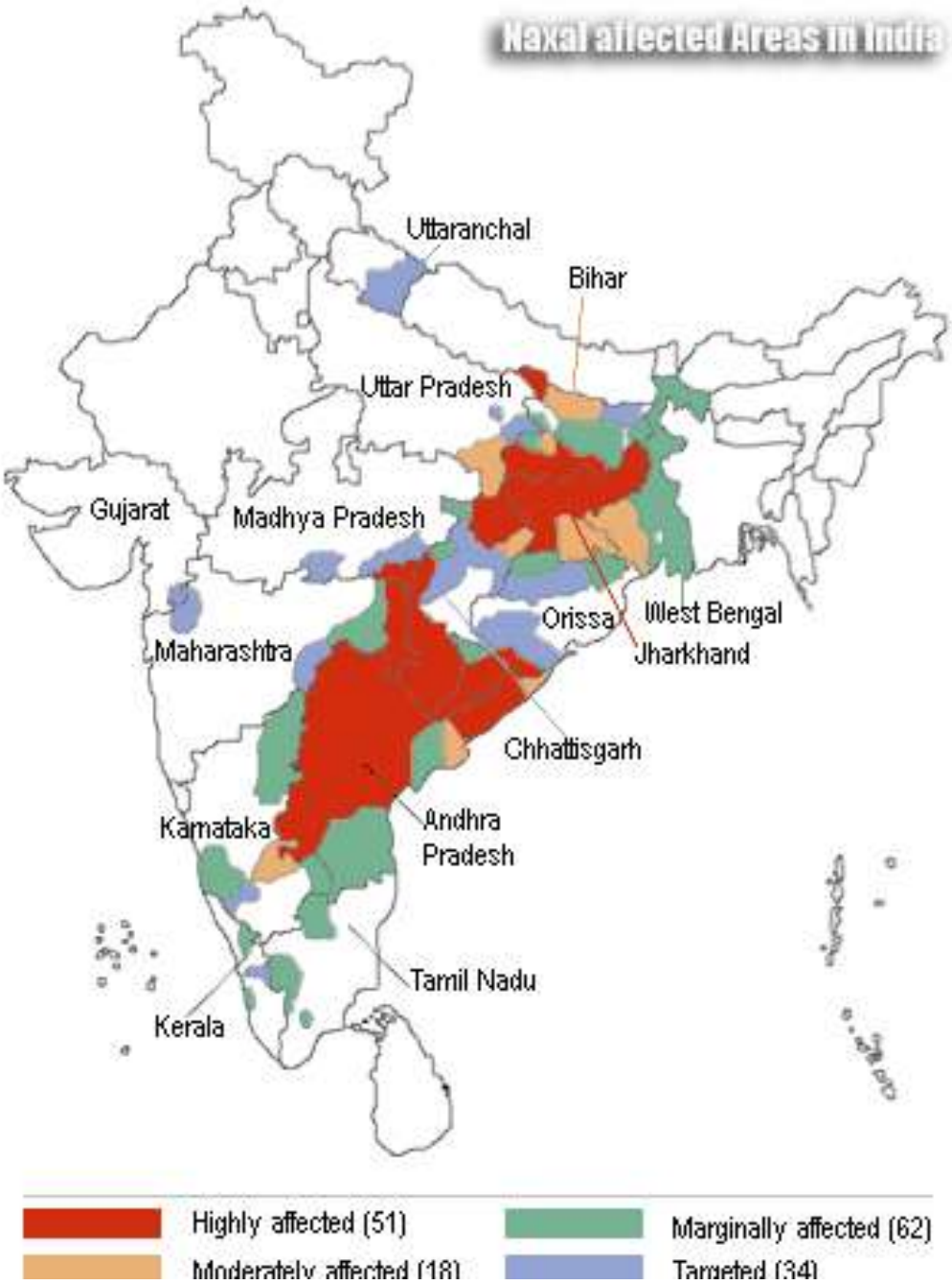

भारत में नक्सल प्रभावित राज्य

भारत में रेड – कॉरिडोर के विस्तार का विकास क्रम

पं. बंगाल

1. नक्सलवाद नक्सलबारी नामक शब्द से बना है। जो कि पं. बंगाल के दार्जलिंग के सिलीगुड़ी अनुमंडल में स्थित एक स्थान का नाम है। यह नेपाल से 4 मील, बांग्लादेश से 14 मील, सिक्किम से 30 मील तथा तिब्बत से 80 मील की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र के 3 स्थान - नक्सलबाड़ी, खारी बाड़ी और फासीदेवा 256 वर्ग मील भूमि में फैले हुए हैं।
2. यहां की अधिकतम जनसंख्या आदिम जनजाति से संबंधित थी। आदिम जनजाति के लोग हैं।
3. राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से इस क्षेत्र का अपना एक विशेष स्त्रावजिक महत्व है।
4. उपरोक्त क्षेत्र जुलाई 1967 में साम्यवाद प्रभावित ''किसान सभा'' के भूमि संबंधी विद्रोह से चर्चित हो गये।
5. इस दौरान चीन समर्थक नारे लगाए गए तथा बलात् भू अपहरण किया गया।
6. इस विद्रोह के प्रमुख नेता कानू सान्याल, चारू मजूमदार, जंगल सान्याल, कदम मलिक तथा मुजीबुरर्ररहमान हो।
7. अव्यवस्था तथा भ्रम की स्थिति ने स्थानीय बदमाशों को उत्साहित किया, वे अपना राज्य स्थापित करने की स्थिति तक पहुंच गए, जिसे बाद में सामानांतर सरकार की संज्ञा दी गई।
8. 25 मई 1967 में एक और दुःखद घटना जिसमें आत्मरक्षा में की गई पुलिस फायरिंग में कुछ औरतों और बच्चे मर गए।
9. बाद में पश्चिम बंगाल की संयुक्त मोर्चा सरकार ने उन्हें किसी तरह दबाने में सफल हुई।

तथा इस बात को उद्घाटित करते हैं कि यह भू-सुधार संबंधी मांगों को लेकर किया जाने वाला आंदोलन मात्र ही नहीं वरन् इसके पीछे माओ के विचारों से प्रेरित वामपंथी राजनीतिक गतिविधियों दृष्टिगोचर होती हैं।

10. नक्सली नेता राज्य सत्ता को हथियाकर चीन के नमूने पर एक दलीय शासन पद्धति कायम करना चाहते थे।

11. यद्यपि नक्सलबारी का आंदोलन असफल रहा लेकिन इससे इसके नेताओं ने कई **शिक्षाऐं** ग्रहण कीं।

- किसान भूमि के लिये नहीं वरन् राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए लड़े।
- किसानों ने प्रति क्रांतिकारी राजतंत्र सशस्त्र आक्रमण के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया।
- संशोधनवादियों के विरूद्ध इस संघर्षका विकास किया गया तथा यह संघर्ष केवल माओ के विचारों के आधार पर ही लड़ा जा सकता है।

12. एक दूसरे महत्वपूर्ण नक्सली नेता कानू सान्याल ने किसान आंदोलन को इस तरह विकसित किया।

13. जमींदारों के एकाधिकार पर आधारित गांव की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ढांचे पर प्रहार करते हुए :

- किसानों के एक वर्ग ने प्राचीनतम सामंती व्यवस्था को छिन्नभिन्न कर दिया।
- सभी दस्तावेतों, रसीदों को जला दिया गया।
- किसान संघर्ष का विरोध करने वालों पर खुली अदालत में मुकदमा चलाकर मृत्युदण्ड दे दिया गया।

- प्रत्येक क्षेत्र में क्षेत्रीय और केन्द्रीय क्रांतिकारी समितियाँ बनाई गई तथा अपनी Peasant Political Power स्थापित की।

कानू सान्याल ने यह भी घोषित किया कि तराई के किसानों का संघर्ष भूमि के लिये ना होकर राज्यसत्ता के लिये था।

14. पं. बंगाल में वापपंथियों के हमजोली रहे माओवादी आज उनके ही अस्तित्व के लिये खतरा बन चुके हैं।

15. राजधानी एक्सप्रेस के अपहरण से लेकर **संकरेल** में पुलिस अधिकारी के अपहरण तक की घटनाओं में यह साबित कर दिया है कि राज्य में माओवादी कुछ भी करने के लिये स्वतंत्र है।

16. आज की स्थिति यह है कि 2100 वर्ग कि.मी. ईलाके में जो की पं. मिदनापुर, बॉकुरा व पुरूलिंग के 12 वन ब्लाकों में फैला है। एक छत्र राज्य है। जंगल महत्ता के नाम से जानेवाले इस क्षेत्र में उनका जंगल राज कायम हो चुका है।

17. नक्सली अपने लाल गलियारे को (छत्तीसगढ़ उडीसा-झारखंड-बंगाल) को उत्तरी बंबाल से जोड़ते हुए नेपाल, सिक्किम व भूटान तक हिंसा का राजमार्ग निर्मित करना चाहते हैं। 1995 में मिदनापुर के कुछ हिस्सों में अपना प्रभुत्व सीमित हो जाने की स्थिति में सन् 2000 में सुशांत घोष (माकपानेता) द्वारा इस क्षेत्र में माओवादियों को आमंत्रित किया गया।

18. माओवादियों को कुछ तथाकथित राजनैतिक पाटियों का परोक्ष/अपरोक्ष सहयोग मिलता रहा और वे पैर पसारते रहे। परिणाम स्वरूप सारा विकास कार्य एवं औद्योगिकीकरण रूक गया है।

यथा –

19. 2009 के बाद माओवादी छुगली की ओर बढ़ गए और अब बांकूरा और पं. मिदनापुर के पड़ोसी जिलों आरमाबाग ईलाके में अपना शस्त्र भंडार स्थापित करना चाहते हैं।

20. उद्योग स्थापित करने के उद्देश्य से PWG का सिक्का स्थापित करने हेतु किशन जी इन दिनों बालीपुर, आरंदा, मायापुर, त्वनकुल व पुरसुरा क्षेत्र में विस्तार कर रहे हैं।

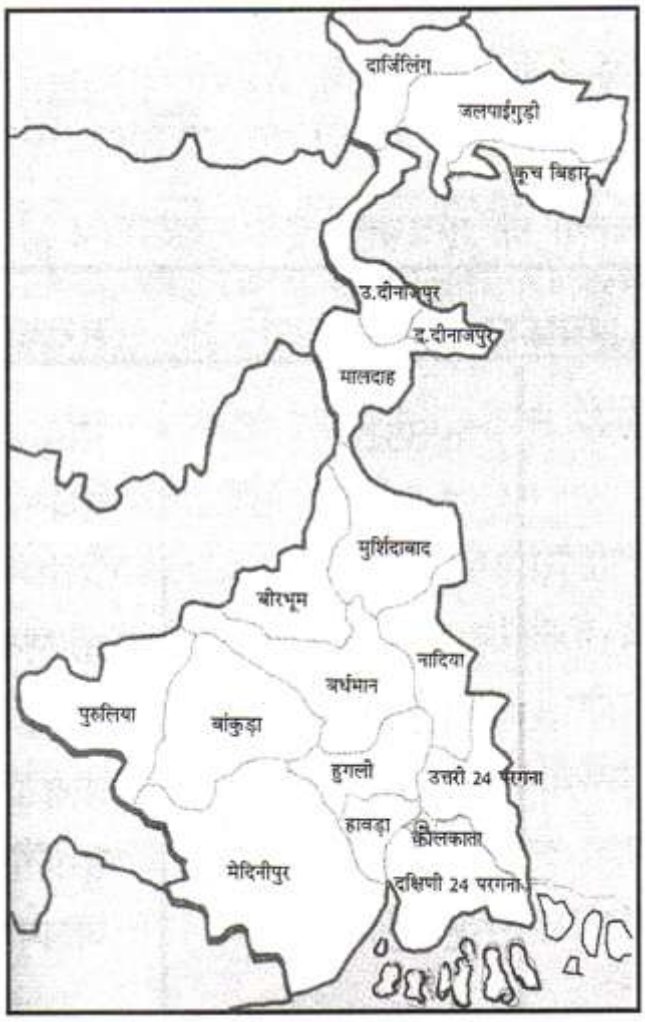

पश्चिम बंगाल का नक्शा

केरल

1. पं.बंगाल के बाद केरल में नक्सलवादी कार्यवाहियाँ प्रारंभ हुई जहां क्रांतिकारी ने मालाबार क्षेत्र को लघु अल्बानिया बनाने का निश्चय किया।
2. कुछ जिलों का भीतरी प्रदेश आतंकवादियों की गतिविधियों के लिये आधार के रूप में चुना गया।
3. पलघाट जिले के Chitur तथा Alathur तालुका के जंगलों में उग्रवादी कम्यूनिस्टों को गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया ।
4. उपरोक्त गतिविधियों से केरल में कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने लगी। यह स्थिति तब और गंभीर हो गयी, जब Tellicherry और Pupilly के पुलिस स्टेशनों पर गुरिल्ला द्वारा आक्रमण किया गया। लेकिन इस हिंसात्मक सक्रियामें केरल का एक नक्सली विशेषज्ञ Kisan Thominan मारा गया।
5. इन हिंसात्मक गतिविधियों में में नेतृत्व की भूमिका का निर्वाह Kunnikal Narayanan, उनकी पत्नी Mandakini और पुत्री कुमारी अजीता ने किया।
6. बंदी बनाए जाने के बाद **Ku. Ajita** ने पुलिस को बताया कि वे ये सबकुछ दलितों के उद्धार और भ्रम का वातावरण बनाने कर रहे थे। इसके अलावा पुलिस स्टेशनों पर शस्त्रास्त्र प्राप्त करने के लिये किया गया, आक्रमण का उद्देश्य लूट की संक्रीयाओं के साथ भय का वातावरण भी पैदा करना था।
7. तात्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री तथा राज्य सरकार से प्राप्त सूचना के अनुसार घटना को अंजाम देने से पूर्व भालों, छूरियों, विस्फोस्टकों, लाठियों गड़ासों, लाल मिर्च का बुरादा तथा बिजली के बल्बों से लैस होकर Target Place को अक्सर घेरते हैं। ऐसा करने से पूर्व वे समस्त संपर्क सूत्रों यथा टेलीफोन के तारों को काट देते हैं।

Ex. 1968, 22 November

300 people, 3 AM & many more Attack police station talli ---

परंतु स्वयं पर आक्रमण होने की स्थिति में वे अपने पीछे झंडों पॉम्पलेट्स तथा माओत्सेतुंग का फोटोग्राफ छोडकर भाग खड़े हुए।

(उक्त घटना नक्सली प्रचार को अभिव्यक्त करती है)

8. तल्लीच्येरी पर आक्रमण के बाद नक्सली Kroikade Pulpilly से होते हुए Chekkodi की ओर अग्रसर हुए। जहां रास्ते में आक्रमण कारियों ने कुछ हारों को लूटा, कुछ घरवालों को डराया धमकाया तथा चांवल नगदी एवम् गहने प्राप्त किए।

9. इसके बाद उन्होंने कालीकट तथा Allelppey जिले में भी दो पुलिस जनों पर आक्रमण किया। और यहां भी विस्तारित हुए।

10. परंतु उसी दौरान् प्रभावी सरकारी हस्तक्षेप के कारण नक्सलियों की गतिविधियों मं आकस्मिक गत्यावरोध उत्पन्न हो गया।

11. इसके कुछ समय के भीतर सारे प्रमुख नक्सली (कुन्नीलाल नारायनन, मंदाकीनी, अजीता, फिलिप एम.प्रसाद, अलुंगन श्री घरीयन् तथा महादेवन) बंदी बना लिये गए तथा अन्य काट्टीयम जिले के देवी कालम तथा Udunbar Chola की ऊँची पहाड़ियों की ओर भाग गए।

12. उनके बचाव के लिये क्रांतिकारियों ने उक्त संपूर्ण घटना की व्याख्या अलग ही तरीके से की जिसमें उन्होंने (केपीआर गोपालन्, अंबादी शंकरन् कुट्टी, मायान् कुट्टी, एटी थामस) ने पुलिस स्टेशन पर आक्रमण की निंदा कर इसे माओ के विचारों से विश्वासघात बताया।

13. केरल में नक्सलवादी गतिविधियों के पीछे चीन का हाथ होने के प्रमाण मिलते हैं। ऐसा पता चला है कि उपरोक्त योजना को दिल्ली स्थित चीनी दूतावास का समर्थन प्राप्त था।

14. एक सरकारी स्त्रोत से यह बात प्रकाश में आयी थी कि चीनी दूतावास के एक अधिकारी द्वारा लिखे गए पत्र में कहा गया था कि –

" The situation is changing fast ---------- study the quotations from Mao - Tse tung carefully ---------- We are sending you new material.

15. एक दूसरे पत्र में माओं की रचनाऐं, फोटोग्राफ तथा पत्रकों को रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजने का वर्णन किया गया है।

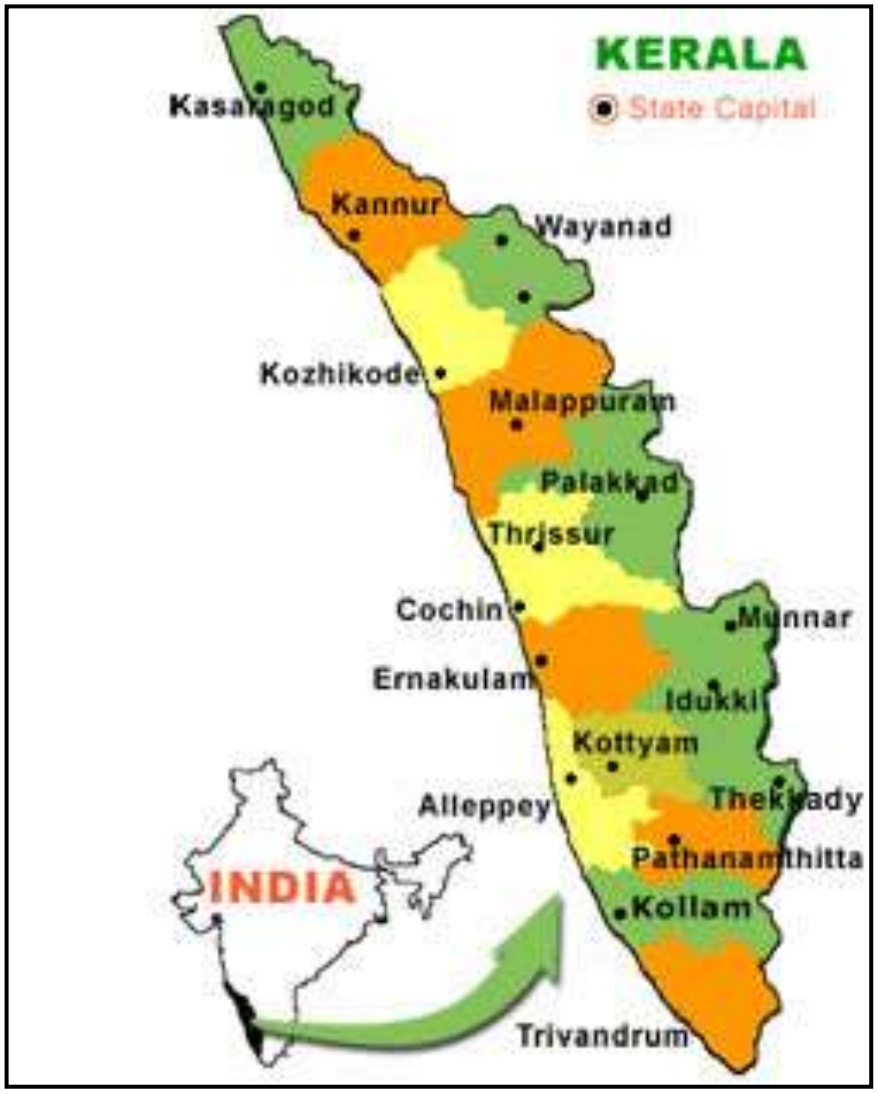

केरल का नक्शा

आंध्रप्रदेश

नक्सलवादी आंदोलन की दृष्टि से आंध्र का तीसरा स्थान है। नक्सली आंदोलन सर्वप्रथम यहां **नालकोण्डा**, **खम्मन** तथा **श्रीकाकूलम्** के कुछ भागों में फैला।

1945-1950 तक उपरोक्त सभी स्थानों में नक्सल प्रसार हुआ लेकिन श्री काकूलम् नक्सल गतिविधियों को प्रमुख केन्द्र बन गया। क्रांतिकारियों ने **कोशिकाऐं** Cell निर्माण करके अपना कार्य करना आरंभ किया। यथा तटीय क्षेत्र में Sompata तथा श्रीकाकूलम जिले में पर्वतीपूरम् में उन्होंने अपनी कोशिकाऐं बनायी।

Vempatapu Satyanarayan के नेतृत्व में उनके आंदोलनों को आरंभ करने में इतनी सफलता मिली कि Shrikakulam Everywhere तथा "Only 10 People can crying about a revolution" जैसे नारे गढ़े जाने लगे तथा संक्रीयाओं का विस्तार करके पुलिस को छिन्न भिन्न करने एवं उन्हें अप्रभावी करने की आशा की जाने लगी।

Anauthpur के T. Nagireddy द्वारा उग्रवादियों साम्यवादियों का एक क्रांतिकारी दल बनाया गया उनके तेलंगाना क्षेत्र के उत्साही समर्थकों ने इस आंदोलन में उनका उत्साहवर्धन किया।

उपरोक्त घटनाक्रम से बंगाल के नक्सलियों से उनका झगड़ा हो गया। यहां तक की नागी रेड्डी के प्रभाव को समाप्त करने के लिये **जून तथा नवम्बर 1969** में क्रमशः चारू मजूमदार तथा कानू सान्याल ने श्रीकाकूलम क्षेत्र का दौरा किया। यद्यपि पुलिस के प्रभावी हस्तक्षेप से यह आंदोलन नियंत्रित कर लिया गया, लेकिन चारू ने इसका दोष नागी रेड्डी के दोषपूर्ण नेतृत्व को दिया।

उस काल में नक्सलवादियों के तीन प्रमुख दल थे - चंद्रापुल्ला रेड्डी CPI (ML) PCC के नेतृत्व कोंडापल्ली सीथारमैया (65) के नेतृत्व वाला तथा देवलपुल्ला, वेंकटेश्वर राव के नेतृत्व वाला दल। इसमें से **पहला दल** चुनाव में भाग लेने में

विश्वास करता है। **दूसरा दल** गोली के लिये गोली की विचारधारा में आस्था रखता हैं **तीसरा दल** स्कूल, कॉलेज एवं महाविद्यालयों में सक्रिय होकर, संगठनों का निर्माण कर अपने पक्ष में जनमत तैयार करता है।

दो छोटे दल – भी इसी समय बने जिसमें से,

पहला दल – वकील पेशा छोड़कर बने नक्सली,

रउफ का दल – तथा दूसरा भूतपूर्व सांसद **कोल्लविकप्पा** का दल है। इसमें से रउफ के दल के पास काफी संख्या में गुरिल्ला दस्ते मौजूद थे। जो कि वारांगल और करीमपूर सीमा पर काफी सक्रिय है।

जिन क्षेत्रों में नक्सली अपना शिकार विस्तार चाहते हैं –

1. सर्वप्रथम उन क्षेत्रों में जाकर अपने **आधार-क्षेत्र** का चुनाव करते हैं।
2. उन क्षेत्रों में गंभीरतापूर्वक संगठन को बढ़ाने तथा सदस्यों को प्रशिक्षित करने का काम करते हैं।
3. इसके बाद क्षेत्र की समस्याओं के बारे में उचित लोगों से गंभीरतापूर्वक विचार विमर्श करके आंदोलनात्मक नारों व संघर्ष की रूपरेखा तैयार करते हैं।
4. इसके लिये जो अवस्थाऐं बताई गई हैं वे अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील है। इसमें विशेषकर युवावर्ग के मस्तिष्क और हृदय से सामंजस्य स्थापित करने की बात कहीं गई है। इस अवस्था में जनाधार स्थापित करने वालों का महत्वपूर्ण कर्तव्य उन लोगों को हथियारमुक्त करना होता है, जिन्हें वैचारिक रूप से गहराई से प्रभावित कर लिया गया हो।

कुछ समय तक शांत रहने के बाद नक्सलियों ने सुदूर दक्षिण में पुनः अपना सिर उठाना आरंभ कर दिया है।

28 दिसम्बर **1980** को तमिलनाडू के उत्तरी आरकाट और आंध्रप्रदेश की सीमा के बीच पर्वतीय क्षेत्र में स्थित Madacappha के निकट उग्रवादी नेता कलामनी पुलिस के साथ एक मुठभेड़ में मारा गया। **पुलिस** के अनुसार कन्नमनि **तिरूपत्तूर**

प्रमुख नेता था तथा भूमिगत हो गया था। उसके द्वारा 3 May 1978 को श्री निवासन और नयनाथू की हत्या तथा 11 March 1980 को ''क्यू'' Branch के कांस्टेबल की हत्या की गई। वह GPL (ML) से संबंधित था।

CPI (ML) के **Central Organization Communitee** के सदस्य कोंडापल्ली सीतारमैया ने 1970 में PWG का गठन किया जो 1991 में PW के नाम से जाना जाने लगा।

इसके तहत ग्रामीण और दूर दराज के इलाकों में संगठन का आधार तैयार कर उन्हें गुरिल्ला या मुक्त क्षेत्रों में तब्दील करना या इसके पश्चात शहरी क्षेत्रों में अपने नियंत्रण में लेना था। PW के गठन के पहले नागी रेड्डी बहुत बड़ा नक्सली नेता था। नक्सलियों ने श्रीकाकूलम के 500 Km^2 के पहाड़ी ईलाके को लाल क्षेत्र घोषित कर दिया। बाद में चारू मजूमदार और नागी रेड्डी में मतभेद हो गए। आंध्रप्रदेश में माओवादियों से जुड़े सहयोगी संगठनों में रेडिकल स्टूडेंट यूनियन, द रितु कुली संगम, द सिंगरेनी क्रमिक संगम, द रेडिकल वुमेन्स विंग रिवोल्यूशनरी राइटर्स एशोसियेशन शामिल हैं।

माओवादियों का उत्तरी तेलंगाना के अदिलाबाद, करीमनगर, वारांगल, निजामाबाद व खम्मम जिलों दक्षिणी तेलंगाना के महबूब नगर, नलगोंडा व मेढ़क जिलों, रायलसीमा के अनंतपुर व कुरनूल जिलों, उत्तरी तटीय आंध्र के विजयनगरम् व विशाखापट्नम् जिलों और दक्षिण आंध्र के गुंटूर जिलों में प्रभाव रहा है। **अक्टूबर-03** में आंध्र के तात्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्राबाबू नायडू पर हमला करके उन्होंने अपने ताकत का परिचय दिया।

नक्सलियों का मूकाबला करने जो आंध्रप्रदेश सरकार ने जो दो प्रमुख कदम उठाए उनमें से एक प्रमुख था, ग्रे-हाउंड का गठन। ग्रे-हाउड विशेष कमांडो यूनिट है, जो जंगल युद्ध लड़ने में माहिर है। इसका सकारात्मक परिणाम हुआ और बड़ी तादाद

में जंगलों से नक्सलवादियों का सफाया हो गया। इसमें 350 माओवादी पुलिस मुठभेड़ में मारे गए जिनमें से 50 शीर्षस्थ नेता थे।

आंध्र में लंबा प्रभाव बनाए रखने के लिए नक्सलियों के ''तीन एस'' जिम्मेदार ये-Secracy, Spead and Surprise

ग्रेहाउंड्स से शिकस्त के बाद नक्सलियों ने रणनीति में भारी बदलाव किया और पीपुल्स गुरिल्ला आर्मी का गठन किया, जिसके सभी दस्तों और मैदानी ईलाकों में सक्रीया संगठनों को जंगलों में भेजा गया। उन्हें 30-40 सशस्त्र आतंकवादियों की प्लाटूनों में बांटा गया। इसमें से 3-4 प्लाटून की सक्रीय है। PI CM के सुप्रीम गणपति ने स्वीकारा कि सन् 2006 में आंध्र के अधिकांश ईलाकों में भारी नुकसान उठाना पड़ा।

नक्सलवादियों के प्रभाव वाले प्रमुख जिले

उड़ीसा

नक्सली आतंकवादी उड़ीसा में हिंसा, आतंक और उगाही के नए रिकार्ड स्थापित करने में जुटे है **''ग्रे-हाउंट्स''** का सबसे ज्यादा नुकसान इन्हें भी उठाना पड़ा।

उड़ीसा भी **लाल आतंक** के गलियारे का हिस्सा है। यहां के कोटापुट, मल्कानगिरी गजपति, रायगढ़ और मयूरभंज जिले माओवादी गतिविधियों का केन्द्र रहे हैं।

सन् 2008 में घात लगाकर किए गए हमलें में 38 ग्रे-हाउड्स कमाण्डों को मार डाला था। चंद माह बाद बारूदी सुरंग विस्फोट करके 17 और पुलिसवालों को मार डाला था। उसी वर्ष उन्होंने धार्मिक नेता लक्ष्मणानंद सरस्वती की भी हत्या कर दी, जिससे राज्य में अनेक स्थानों में हिंसात्मक प्रदर्शन भी हुए। सन् 2009 को उन्होंने आदिवासी बहूल मयूरगंज में एक फुटबाल मैच के दौरान इस क्षेत्र के पूर्व सांसद सुदाम मरांडी पर हमला कर दिया। यह जगह माओवादी हिंसा प्रभावित पश्चिमी मिदनापुर से महज 4.5 कि.मी. दूर ही है। इसके बाद उन्होंने लोकसभा सदस्य सुनील महतो की भी हत्या कर दी।

क्रमशः उन्होंने सुरक्षित अभ्यारण्य, फोरेस्ट रेंज के अफसरों के दफ्तरों, वाहनों, स्कूलों, रेल्वे स्टेशनों, रेल लाईनों को निशाना बना दिया।

उड़ीसा में नशीले पदार्थों जैसे गांजा की तरक्की को बढ़ावा देकर मोटी कमाई कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों से संखलपुर कुडनागली जिलों में बड़ी तेजी से गांजे की अवैध खेती की जा रही है। 4-5 हजार किसान इसकी अवैध खेती कर रहे हैं। पूर्व में गांजे की खेती जुर्म नहीं थी, लेकिन 1945 से गांजे की खेती पर रोक लगा रखी है।

इसी खेती से प्रति एकड़ किसानों को 4-5 लाख की आमदनी हो जाती है। अतएव किसान रूचि ले रहे हैं। परन्तु यहीं **गांजा** लाल गलियारे से होता हुआ देश विदेश पहुंचता है। जिनमें से प्रमुख केन्द्र छत्तीसगढ़, झारखंड, पं. बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश हैं।

यह सामान नक्सलियों की सुरक्षा में बिना किसी दिक्कत लाया, ले जाया जाता है। इस संरक्षण के बदले नक्सली मोटी रकम वसूलते हैं। अनुमान है कि 9000 करोड़ का अवैध कारोबार हो रहा है। 2006 में पुलिस प्रतिष्ठानों पर हमले और विहिप नेता **लक्ष्मणानंद** की **सरस्वती** की हत्या की साजिश सरस्वती ऊर्फ सुभश्री नामक महिला ने रूची थी। जो की एक तरह से व्यवस्थापन का कार्यभार संभालती थी एवं उसके पति **सव्यसाची पांडा** माओवादियों के उड़ीसा राज्य समिति का सचिव है। बाद में सुभश्री को गिरफ्तार कर दिया गया।

सुभश्री से पूछताछ करने पर पता चला कि माओवादी कोरापुट जिले के नारायन पटना ब्लॉक को अपना केन्द्र बनाने पर विचार कर रहे थे।

सुभश्री को रायगढ़ के जंगलों में प्रशिक्षण दिया गया था। वहां उसने आंध्र-उड़ीसा सीमा स्पेशल जोनल कमेटी बासधारा डिविजन में काम शुरू किया। **CPI** की उड़ीसा कमेटी का गठन होने के बाद वह उसमें शामिल हो गई।

महाराष्ट्र

पूर्वी महाराष्ट्र के **आठ जिलों** के भूखंडों को पौराणिक काल से लेकर अब तक ''विदर्भ'' के नाम से ही संबोधित किया जाता है। भाषाचार प्रतिरचना से पूर्व वह पुराने मध्यप्रदेश का अंग था। और अब महाराष्ट्र का भू-भाग है, उसी विदर्भ के घने जंगलों, विशाल नदियों और पहाड़ियों के क्षेत्र चंद्रपुर जिले में अब नक्सलवादी गतिविधियाँ (1970) के दशक में विकसित हो चुकी थी।

1. चंद्रपुर जिले के जिस क्षेत्र में **नक्सलवादियों** और **डाकूओं** का जोर है वह **सिंरोचापट्टा** एसा है। जिसकी दक्षिणी सीमा आंध्रप्रदेश के **नक्सलवादियों के गढ़ आदिलाबाद जिले** से लगी हुई है। उसी का पूर्वी ईलाका छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के बस्तर, जगदलपुर और कांकेर की सरहद पर है, उसके पश्चिम में विदर्भ का **यवतमाल जिला** और उत्तर में **वर्धा, नागपुर तथा भंडारा हैं।**

3. संपूर्ण ''महाराष्ट्र'' में **चंद्रपुर जिले का** क्षेत्रफल 25 हजार 646 वर्ग किलोमीटर होने से वह सबसे बड़ा जिला है। इसके बाद सबसे बड़ा जिला **यवतमाल** है किन्तु उसका क्षेत्रफल **13 हजार 625 वर्ग कि.मी.** ही है।

वह जिला उत्तर (**चंद्रपुर**) उत्तर से दक्षिण की ओर **बैनगंगा नदी** के कारण सीधा **दो भागों** में बंटा हुआ है। उसका **पश्चिमी हिस्सा** करीब करीब गैर आदिवासी तथा आवागमन और औद्योगिक दृष्टि से बिलकुल अलग है। पूर्वी भाग घने जंगलों, पहाड़ियों तथा आदिवासियों की संस्कृतिक स्थली हैं। उसमें भी **सिंरोचा** इतनी दूर है कि बरसात में दस-बारह दिनों के अंतराल में उस ओर बसें आती जाती हैं। **मोयाबिनपेट्टा सिरोचा** से 40'50 कि.मी. दूर होगा। यहीं एक **नक्सली नेता - पेद्दीशंकरम्** मारा गया था।

यही वो समय था जबकि **पेद्दीशंकरम्** की शहादत के बाद **नक्सलवादी गतिविधियों** का शोर शुरू हुआ। पुलिस ने सूचना दी कि उनके साथ और भी 4

नक्सलवादी नेता थे, उन सबने पुलिस पर गोलियाँ चलाई। इसके बाद वे रेडियो, बंदूक और कारतूस छोड़कर भाग गए। (9 चार)

मोयाबिनपेट्टा लगभग 100 घरों का वनग्राम है। उसके आसपास सिरकुंडा, **अमरासी, अंकीसा और असरअली** जैसे छोटे-छोटे गांव हैं। उन गांवों में गोड़ी अथवा मड़ीया नहीं अपितु **तेलगू** बोली जाती है।

नक्सलवादी पेद्दीशंकरम् के जीवित रहते हुए ही उन गावों में घूसकर 3-4 महीनों में स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हुए **लोकगीत और लोकसंगीत** से आदिवासियों को उन पर होने वाले अत्याचारों के प्रति सचेत किया करते थे। इसका प्रभाव गांव वालों पर इतना हुआ कि गांव वाले अब उन्हें भोजन बनाकर भी खिलाने लगे।

पेद्दी के हमसफर और उसके दोस्तों ने उसे **गॉड ऑफ ऑनर** दिया था। उनकी मौत के बाद उनके साथियों ने पर्चे ''सिरोंचा'' में ब्लॉक स्तर के 70-80 गांवो में बांटे गए। **वारांगल** और **खम्मत** जिलों में दिवारों पर नारे लिखे गए जिसमें नक्सलियों को सच्चा देशभक्त बताया गया।

4. महाराष्ट्र के **''गढ़चिरौली''** क्षेत्र के मरकेगांव जिले में नक्सलियों ने जिस तरह अक्टूबर 2009 में 15 पुलिसवालों को निशाना बनाया, वह क्रुरता का एक नया रिकार्ड है। उन्होंने घात लगाकर किए इस हमले में पुलिसवालों को मारने के पहले उनकी आंखे कोड़ डाली और उनके हाथ पैर काट डाले।

5. महाराष्ट्र के दो सीमावर्ती जिलों गढ़चिरौली और गोंदिया में नक्सली हावी हैं, जबकि 4 अन्य जिले चन्द्रपुर, भंडारा, यवतमाल व नांदेड़ उनके राडार पर हैं।

इस क्षेत्र में नक्सली आंतक लगभग तीन दशक पुराना है।

6. गढ़चिरौली में पीपुल्स वार ग्रुप सन् 1980 से ही सक्रिय था। बाद में इसका सन् 2004 में माओवादी कम्यूनिस्ट सेंटर में विलय हो गया और फिर CPI (माओवादी) पार्टी अस्तित्व में आयी।

7. महाराष्ट्र एवं आंध्रप्रदेश की सीमा से लगने वाले 15000 कि.मी.^{2} के इस ईलाके के करीब 400 कि.मी. क्षेत्र को नक्सलियों ने ''मुक्त-क्षेत्र'' घोषित कर दिया था। वहां उनका आदेश चलता था, पर पिछले 3 वर्षों में इनके खिलाफ छेडे गए अभियान में बड़ी तादाद में माओवादी नेताओं के मारे जाने या गिरफ्तार अब वे 25 वर्गकि.मी. क्षेत्र पर ही अधिकार जमाए हुए है। इसकी शुरूवात सन् 20036 में नागपुर में दो बड़े नक्सली नेताओं - मुरलीसत्या रेड्डी व अरूण केरेरा की गिरफ्तारी से हुई।

उनकी जानकारी के आधार पर पुलिस ने मुंबई से उनके विचारकों वेरनन गोसाल वेंज व श्रीधर श्रीनिवास को गिरफ्तार किया। पुलिस की कार्यवाही के चलते 250 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

पूर्वी महराष्ट्र में स्थित गढचिरौली एक खुबसूरत ईलाका है, जहां मड़िया गोड़ आदिवासी तथा अन्य प्रधान व कोलम जाति के लोग भी रहते हैं साथ ही 13 लाख की जनसंख्या का ½ हिस्सा आंध्रप्रदेश से आए विस्थापित बंगालियों का है। अब यह हिस्सा माओवादियों और सरकार के बीच का रणक्षेत्र बन चुका है।

आंध्रप्रदेश के करीमगंज तहसील से शुरू होने वाला यह ईलाका ''छत्तीसगढ़'' के दुर्ग जिले के मसौली क्षेत्र तक फैला हुआ है। यहीं 6 अक्टूबर 2009 को सुरेश हलामी नामक युवक की वहशियाना तरीके से हत्या कर दी।

सब ज्यादा नक्सल प्रभावित क्षेत्र गोंदिया और गढ़चिरौली ही थे। पर अब नक्सल राज्य के कुछ और ईलाकों में घूसपैठ करने की कोशिश कर रहे हैं।

बिहार

(60-70) इसी काल में बिहार के चंपारन, मुजफ्फरनगर, दरभंगा, सहरसा, पुर्निया, मुंगेर तथा संथाल परगना जिलों में हजारों नक्सलियों ने आतंक का साम्राज्य स्थापित किया।

नवम्बर 1969 में पहली बार गांव में **नक्सली आतंक** का अनुभव किया गया। जब कुछ आततायियों ने एक घनी किसान के घर पर बमों से आक्रमण किया, जिसमें किसान तथा उसका पुत्र मारा गया। इसी समय एक पखवारे के अंदर एक दर्जन से अधिक आंदोलनकारी नेताओं को बंदी बनाया तथा परिस्थिति पर नियंत्रण स्थापित किया।

लगभग उसी समय (1969) बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के नरसिंहपुर गांव के नक्सलवादियों के एक दल द्वारा दो भाई मारे गए। यहीं दल बिहार के L.S. Collage के परिसर में स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा को अंग-भंग करने के लिये जिम्मेदार पाया गया।

मुजफ्फरपुर को **"बिहार का नक्सलबाड़ी"** कहा जा सकता है। 29 Nov. 1968 को तात्कालीन गृहमंत्री श्री चौहान ने लोकसभा के अपने उद्‌बोधन में नक्सली हिंसा का उल्लेख किया है।

8 दिसम्बर 1968 को रमनियां गांव (उत्तरी बंगाल, बिहार सीमा के पास) में एक बड़ी भीड़ ने लूटपात (धान-अनाज संबंधी) तथा आगजनी जैसी घटनाओं को अंजाम दिया। कुछ व्यक्ति घायल हुए तथा कुछ की हत्या कर दी गई।

इसके पश्चात **चारू मजूमदार** के नेतृत्व में **मुजफ्फरपुर नगर** में एक राज्य सम्मेलन हुआ (गैर सरकारी सूचना के अनुसार)।

एजेंसियों के अनुसार इन सम्मेलनों में वे हथियार थे इस सम्मेलन का मुख्य उद्‌देश्य गांव, समाज जंगलों तथा घनी किसानों की खाली भूमि पर कब्ज़ा करना था।

सशस्त्र क्रांति लाने के उद्देश्य से उन्होंने माओ के साहित्य तथा पोस्टरों का प्रचार किय। इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर हत्या, डकैती, आदि की भी सूचनाऐं मिली। गुप्त कैंपों में हथियारों का भी प्रशिक्षण दिया गया। (ये नक्सली प्रचार को प्रदर्शित करता है)

बिहार में मुजफ्फरपुर, दरभंगा, चंपारन, मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया, सहारिया, शाहाबाद, रांची तथा सिंह भूमि नक्सलियों के प्रमुख केन्द्र बने।

60 के दशक में नक्सलवादी मुख्यता पं. बंगाल, आंध्रप्रदेश, केरल, बिहार तथा तमिलनाडू में आतंक फैलाए हुए थे। (आपातकाल के अंत तक)।

आपातकाल के बाद जनता शासन काल में निरोधक नजरबंदी कानून के तहत बंदी बनाए गए अनेक सक्रिय नक्सली कार्यकर्ताओं की रिहाई के बाद आतंकवाद को पुनर्जीवन मिला **कानू सान्याल** तथा अन्य दो को 1976 में **मृत्युदण्ड** देने के बावजुद 1979 में मुक्त कर आजीवन कारावास दिया गया।

नक्सली गुप्त बैंठके आयोजित करने तथा **गुरिल्ला युद्ध की शिक्षा** देने के साथ ही पूर्वी भारत में Puratchi Kanal (क्रांति की मशाल) नामक एक साप्ताहिक का भी प्रकाशन करते हैं, तथा Parliament और राज्यसभा को समाजवाद के नाम पर धोखा के रूप में प्रचारित करते हैं।

उनके अनुसार **"हिंसा बिना क्रांति"** संभव नहीं है। यों तो नक्सलवादी आंदोलन की शुरूवात मुजफ्फरपुर के मुशहरी प्रखंड से हुई थी, जिसे लोकनायक श्री **जय प्रकाश नारायण** ने आकर रचनात्मक मोड़ दिया। नगर फिर भी बनारस के आसपास से शुरू होकर पटना तक के कई ईलाकों में नक्सलवाद बन गए। जिनमें से **रोहतास, भोजपुर, गया** और अब **पटना** विशेष रूप से उभरकर आए हैं। इसी सिलसिले में **मुशहर** और उसका साथी **रघुनंदन** मारा गया, देवकूली में 1965 में 5 भूपति मारे गए।

1965 में ही **पुनपुन थाने** में नक्सली कार्यकर्ता **सुश्री निर्मला चटर्जी** गिरफ्तार की गई और यह सिलसिला चलता रहा।

पटना जिले के धनरूआ, मसौढ़ी, मसौढ़ी, पुनपुन, विक्रम और नौबतपूर प्रखंडों के वे गांव जहां आवागमन या सवारी का पहुंच पाना असंभव है। नक्सलवादियों के कार्यकलापों का अड्डा बन गया है। कहा जाताहै कि नक्सलियों के संघर्ष का पुनरांभ 1981 में हुआ।

बिहार में संघर्ष का मुद्दा **न्यूनतम मजदूरी एक्ट** से आरंभ हुआं (1965) जो कई वर्षों बाद भी लागू नहीं किया जा सका है। जानकारों के अनुसार ''किसान सभा'' "CPML" द्वारा संचालित है। यह संघर्ष ''चारू मजूमदार'' के सिद्धांतों पर चलने वाला है।

विक्रम प्रखंड के दनाड़ा और गंगाचक दोनों पंचायतों में उग्रवादियों की समानांतर सरकारे हैं। इसके मुखिया को क्षेत्र में ''**कमांडर**'' और सरपंच को ''**असिसटेंट कमांडर**'' कहा जाता है। ''**आलोत**'' व्यक्तियों की सरकार का इतना आतंक रहता है कि इसके खिलाफ किसी को बोलने की जरूरत नहीं होती। किसी ने यदि साहस किया तो उस व्यक्ति को उपर से छः इंच ''**छोटा**'' कर देने की चेतावनी दे कर छोड़ दिया जाता है। इनकी अपनी एक अलग ही सरकार होती है। ''सरकार'' के निर्देश पर इसके सिपाही समय-समय पर ''**टैक्स**'' वसुलते हैं और टैक्स देने में आनाकानी करने वालों के खेत में **रात में सफाया** कर देते है।

बिहार में नक्सली टकराव का नया रूप देखने को मिलता है। यहां वामपंथी उग्रवादी परिवर्तन लाने के लिये उत्प्रेरक की भूमिका निभाने की बजाय खुद प्रतिक्रियावादी आंदोलन के रूप में उभरे। वहां उनका संघर्ष जाति और आदिवासियों के बीच विभाजित रहा। वहां नक्सली टकराव के चलते जातिगत आधार पर सेनाओं का गठन हुआ।

नतीजन अरवल, बेलछी, पिपरा, पारस-बीधा, नोन्हीं नगवां में बड़े पैमाने पर नरसंहार की घटनाऐं हुई। 1961 में जघनाबाद से CPI (ML) पार्टी युनिटी और लिबरेशन के गुरिल्लों ने हमले शुरू किए। उसी समय दक्षिणी बिहार में MCC ने औरंगाबाद, पमालू और हजारीबाग में अपनी गतिविधियां बढ़ा दीं। उनसे निपटने 1968 में तात्कालीन मुख्यमंत्री बिदेंश्वरी देवी ने नक्सलियों का सामाना करने हेतु **जमींदारों को हथियार** देने का फैसला किया।

फिर भूमिहारों की ब्रम्ह ऋषि सेना, तो पठानों ने सनलाइट सेना, ठाकुरों, ब्राम्हणों ने क्रमशः कुंवर व गंगा सेना का **जातिगत आधार** पर गठन किया।

बिहार में माओवादी **पैसा कमाने पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित** करते हुए जमीदारों को संरक्षण देना शुरू किया।

फिरौती से वसूले कए पैसों की वजह से माओवादियों लिबरेशन व पार्टी यूनिटी गुटों में **टकराव** हो गया।

मंडल प्रकरण के बाद नक्सली समस्या से राजनीति भी जुड़ गई। पार्टी यूनिटी ने चुनावी व्यवस्था का समर्थन किया, ताकि वह लिबरेशन गुट पर नजर रख सके।

MCC भले ही चुनाव व्यवस्था में विश्वास न रखे लेकिन उसने भी कुछ खास गुटों का समर्थन किया।

राज्य के सर्वाधिक प्रभावित जिलों-गया, औरंगाबाद, रोहतास, कैमूर, नवादा, जमूई व बांका में लोगों को नक्सली मंसुबों से परिचित कराने के लिये विशेष अभियान शुरू किया गया है।

बिहार में व झारखंड में नक्सलियों ने दो क्षेत्रीय समितियां-ईस्टर्न सेंन्ट्रल रीजनल ब्यूरो बनाई हैं। ये समितियां उत्तरप्रदेश व उत्तराखंड के साथ बिहार में भी नजर रखती हैं। बिहार-झारखंड को दो जाने में बांटा गया है।

1. मगध, सेंट्रल, सोनगंगा, विंध्याचल, जमूई, भागलपुर, बांका, मूंगेर और लखीसराय जोन।
2. कोयला संघ जोन।

यहां कार्यरत कमेटियाँ

1. सेंट्रल मिलिट्री कमीशन
2. स्पेशल एरिया मिलिट्री कमीशन
3. रीजनल मिलिट्री कमीशन जोनल कमांड
4. सब जोनल कमांड
5. एरिया कमांड

कुछ प्रमुख घटनाऐं :–

1. 2009 - बिहारबंद (उत्तर) मोबाईल कंट्रोल रूम को उड़ा दिया। रोहतास - डेहरी मुख्य मार्ग पर सीमेंट से लदे ट्रक को आग लगा दी "SMPL" के दफ्तर पर हमला करके 6 जवानों को मार डाला।
2. पटना से 120 कि.मी. दूर मैनपुर गांव में अमोनियम नाइट्रेट के 110 नक्सल कैंप से बरामद हुए।

झारखंड

झारखंड में गढ़वा, लातेहार, चतरा, पालम, डाल्टनगंज, बोकारो, आजारीबाग, धनबाद, गुमला, लोहारदगा आदि ईलाके नक्सलियों के प्रभाव में हैं।

पलामू में भीतर जाते ही नक्सलराज शुरू हो जाता हैं, जहां सरकार का कोई नियंत्रित नहीं है। पलामू को नक्सली अपना गढ़ बना रहे हैं, कारण यह है कि वहां घने जंगल है, और आक्रमण की स्थिति में उनका पड़ोसी राज्यों में खिसकना (जंगलों में) आसान हो जाता है। सूत्रानुसार पलामू छ.ग. के बस्तर सरीखा नहीं बन पाएगा।

एसा अक्सर होता है कि ''लाल कॉरीडोर'' के जिस राज्य के जिस ईलाके में नक्सली असुरक्षित महसुस करते हैं, वे उसे छोड़कर झारखंड जैसे सुरक्षित स्वर्ग में आना चाहते हैं।

झारखंड में नक्सली आपरेशन को अंजाम देकर उसके तुरंत बाद दस्तों में भाग जाते थे। पलामू में नक्सलियों का खासा **जनाधार** है।

अब पलामू के अलावा रांची, सिंहभूमि आदि ईलाके जो पूर्णतः अछूते थे अब उनके ग्रामीण ईलाकों में भी नक्सल प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

1970-80 के दशक में नक्सलियों के तीन प्रमुख गुट बिहार और झारखंड में सक्रीय थे। इनमें **CPI(ML)** लिबरेशन, **MCC, CPI (ML)** पार्टी यूनिटी, **CPI (ML)** पीपुल्स वार, जैसे दल सक्रीय थे।

इसके बाद पार्टी यूनिटी की कोशिशें लगातार जारी थी। कि ''पीपुल्स वार'' के साथ मिलकर पार्टी को विस्तार किया जाए। अंततः सन् 1997 CPI (ML) पार्टी यूनिटी और CPI (ML) पीपुल्स वार का आपसी विलय हो गया। इन सभी दलों ने 2004 में इन सभी दलों का विलय होकर CPI (M) गठन किया जो नक्सलियों की अधिकृत पार्टी है। लेकिन देशभर में देश और राज्य सरकारों ने ''प्रतिबंधित'' घोषित कर रखा है।

सन् 2006 में टूटन के आसार देखते हुए CPI (M) पार्टी कांग्रेस बुलानी पड़ी। नाम दिया गया ''यूनिटी कांग्रेस''। यूनिटी कांग्रेस में यह भी तय हुआ की एक ऐसा

आधार बनाया जाए जहां से भागना न पड़े। हालांकी Party Unity वाले नक्सलियों ने इसका विरोध किया। दरअसल आंध्रप्रदेश में जब वार्ता नाकाम रही, नक्सलियों को खदेड़ दिया गया और तेलंगाना को लगभग खाली करा दिया गया तो उस दौर में Peoples war की ऊर्जा बचाने के मद्देनजर दंडकारण्य, उडीसा और महराष्ट्र में उसे एकजुट करने की कोशिशें हुई। उत्तरी भारत में उस समय ध्यान छोड़ दिया गया। नतीजतन MCC कडार ने उत्तरी भारत में नियंत्रण जमा लिया। शायद आपसी मतभेदों का ही नतीजा है कि पार्टी यूनिटी के नेताओं ने मूल विचारधारा से विमुख होकर चुनावी रणनीति के मैदान में उतरना तय कर लिया है।

मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश के विभाजन के 28 साल पहले ही नक्सली गतिविधियां शुरू हो गई थी। पीपुल्स वार ग्रुप ने इसकी शुरूवात सन् 1962 में दक्षिण बस्तर के भोपालपट्नम से की और अगले डेढ़ दशक में यह उत्तर बस्तर के नारायणपुर पखांजूर तक पहुंच गई। नक्सली नेता **गणपति** को सन् 1985 में एक पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया गया। उसके बाद भी उनका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता ही गया। वे नारायणपुर, कोंडागांव, कांकेर तथा भानुप्रतापपुर तक जा पहुंचे।

नक्सली नेता : **गणपति**

नक्सलियों ने सन् 1990 में अपनी रणनीति में बदलाव लाते हुए जंगल विभाग के अफसरों और पुलिस के खिलाफ टकराव शुरू कर दिया। मध्यप्रदेश में नक्सली ''मारो और भागो'' की रणनीति अपनाते रहे।

मध्यप्रदेश में पीपुल्स वार ग्रुप शुरू से ही हावी रहा था। लिहाज़ा **CPI (M)** में उनके विलय के बावजूद उनका संगठनात्मक ढांचा लगभग पुराना ही रहा। इस संगठन में सेंट्रल कमेटी के बाद क्षेत्रीय समिति का स्थान होता है। उनके अधीन वन समिति व डिविजन कमेटी होती है। हर डिविजनल कमेटी का कार्यक्षेत्र तय होता है और उसके नीचे कुछ दलम् होते हैं।

आमतौर पर मध्यप्रदेश में दलम् के कमांडर व सदस्य अपना असली नाम जाहिर नहीं करते। वे छद्म नामों का इस्तेमाल करते हैं। ज्यादातर लोग खुद को आंध्रप्रदेश का निवासी बताते हैं। दलम् के सदस्यों का भी तबादला होता रहता है। बालाघाट, मंडला, डिंडोरी जिले तो शुरू से ही नक्सली हिंसा से प्रभावित रहे हैं।

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ नक्सली हिंसा से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले राज्यों में एक है। कुछ विशिष्ट तथ्य :-

छत्तीसगढ़ म.प्र. के 16 जिलों को पृथक करके बनाया गया है। राज्य के सबसे बड़े शहर रायपुर को राजधानी बनाया गया है। 1 नवंबर 2000 को इसको एक अलग राज्य का दर्जा दिया गया। राज्य की सीमाऐं देश के 6 अन्य राज्यों से मिलती हैं। यथा -

उत्तर दिशा में	-	उत्तर प्रदेश
उत्तर पूर्व में	-	झारखंड
दक्षिण में	-	आंध्रप्रदेश
दक्षिण पूर्व में	-	उड़ीसा
दक्षिण पश्चिम में	-	महाराष्ट्र
पश्चिम उत्तर में	-	मध्यप्रदेश

वन संपदा की दृष्टि से छ.ग. समृद्ध है राज्य का 45% भू-क्षेत्र वनों से ढंका है।

राज्य में कुल जिले :- 27

यहां बस्तर, दंतेवाड़ा और कांकेर सबसे ज्यादा नक्सल प्रभावित ईलाके हैं। इसके अलावा बीजापुर, नारायणपुर, सरगुजा, जशपुर नगर भी खास तौर पर नक्सल प्रभावित है। साथ ही राजनांदगांव, धमतरी, महासमुंद, रायगढ़ आदि भी नक्सल प्रभावित क्षेत्र है।

''बस्तर क्षेत्र'' को तो माओवादी **दण्डकारण्य** नाम से पुकारते हैं। सबसे पहले सन् 1970 के दशक में बस्तर के लुहाडीगुडा में माओवादियों के पर्चे बांटे जाने से नक्सलियों की उपस्थिति का पता चलता था। तब यह कहा जाता था कि आंध्रप्रदेश में

पुलिस दबिस के कारण वे इधर वाले क्षेत्र में शरण लेने आए हैं। हालात सामान्य होते ही वे लौट जायेंगे।

लेकिन बस्तर के जंगल, आदिवासियों का पिछड़ापन उनके लिये बहुत ही फायदेमंद साबित हुआ। शुरू में उन्होंने आदिवासियों को सरकारी कर्मचारियों और व्यापारियों से राहत दिलाई। इन ईलाकों में प्रशासन नाम की कोई चीज ही नहीं थी। बाद में युवकों को जबरन नक्सली बनाने लगे।

छत्तीसगढ़ में महाराष्ट्र की सीमा से लगे बस्तर के जंगल और सरगुजा के बिहार से जुड़े क्षेत्र नक्सलियों की शरणस्थली बनने लगे। धीरे-धीरे नक्सली बस्तर में अपना एकछत्र राज्य चलाने लगे।

छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का विस्तार सन् 1980 के दशक से शुरू हुआ। अगले डेढ़ दशक तक सरकार की ओर से इस दिशा में कोई कार्यवाही नहीं की गई है। वे 15 साल तक बस्तर में अपना शासन चलाते रहे। सिर्फ शहर उनकी पकड़ के बाहर थे। पुराने बस्तर के 40,000 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में अभी भी निर्णायक लड़ाई लड़ी जानी है।

आंध्र, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा में पिपुल्स वार ग्रुप का सक्रिय क्षेत्र

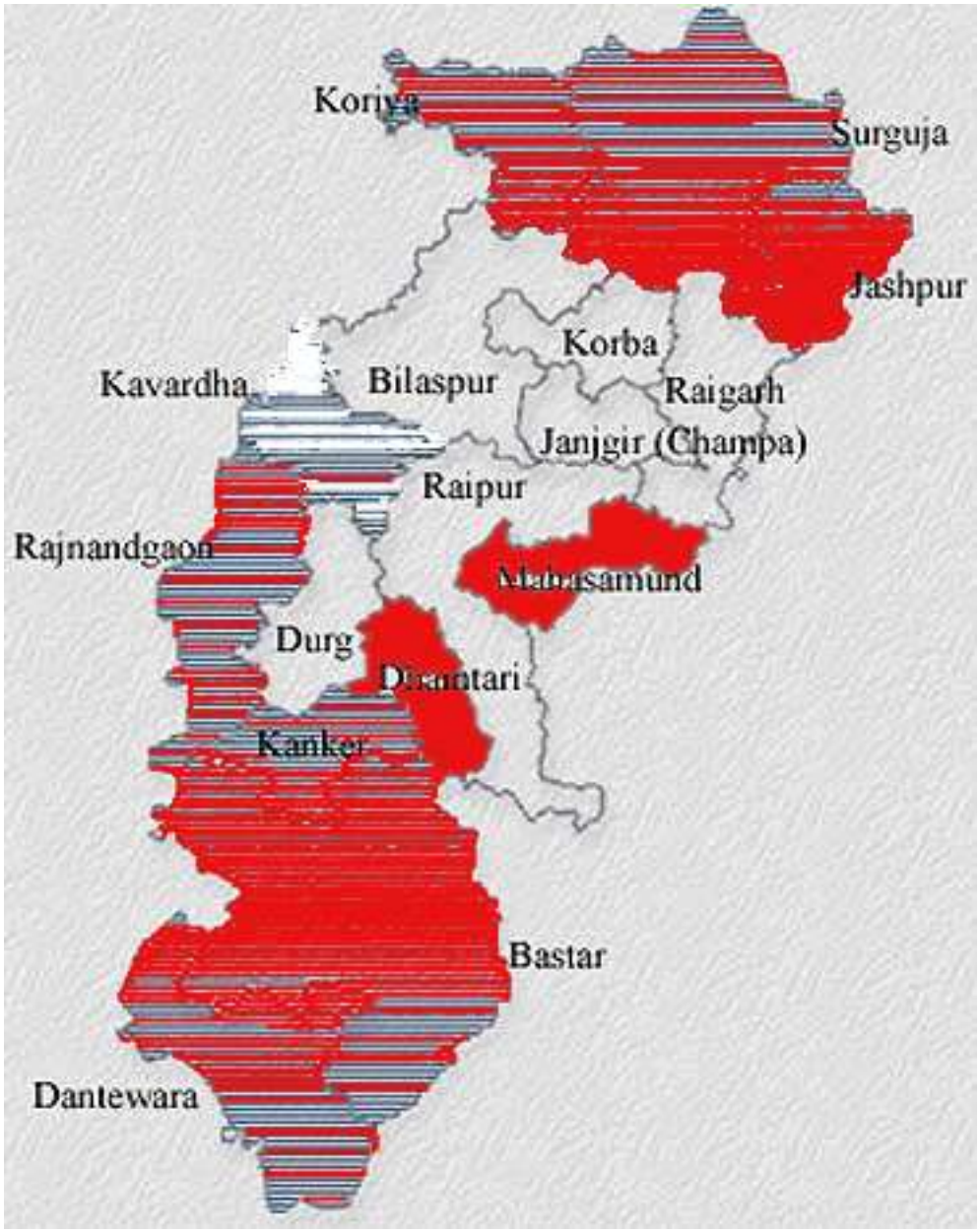

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्र

छ.ग. के जिलों का (नक्सल प्रभावित) राज्यों से जुड़ाव

1.	राजनांदगांव	महाराष्ट्र (गढ़चिरौली)/उदाहरण सन् 2009 की घटना जिसमें विनोद कुमार चौबे जी (पुलिस अधीक्षक) पर घात लगाकर बैठे नक्सलियों ने हमला किया, जबकि इसके ठीक पहले वे एक और घटना को अंजाम दे चुके थे। उक्त घटना में 700 नक्सली शामिल थे। बारूदी सुरंगों का उपयोग करके घटना को अंजाम दिया। और महराष्ट्र के गढ़चिरौली भाग गए।
2.	महासमुंद	उड़ीसा, उदा. सन् 2009-10 में नक्सलियों की उपस्थिति प्रकाशित हुई जिसमें कुछ नक्सली हथियार समेत घर दबोचे गए।
3.	बस्तर एवं नारायणपुर	उड़ीसा एवं महाराष्ट्र
4.	दंतेवाड़ा एवं बीजापुर	आंध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र
5.	सरगुजा	झारखंड एवं उत्तर प्रदेश
6.	जशपुर	झारखंड
7.	रायगढ़	झारखंड एवं उड़ीसा

नक्सलियों की जारी हिंसा को देखते हुए ही छत्तीसगढ़ को सात चरण के **OAI** ऑपरेशन के लिये चुना गया। इस चरण में उत्तर दक्षिण कांकेर और गढ़चिरौली महाराष्ट्र के पूर्वी पश्चिम ईलाकों को शामिल किया गया है। इसमें अबुझमाड़ के 6000 वर्ग कि.मी. में फैले वे जंगल भी शामिल हैं, जहां आज तक किसी सरकारी कर्मचारी के जाने की हिम्मत नहीं हुई है।

यह जंगल नक्सलियों की शरण स्थली होने के साथ ही उनके प्रशिक्षण शिविरों का केन्द्र बना हुआ है। छत्तीसगढ़ में सन् 2005 में ही जंगलवार केयर स्कूल की स्थापना की जा चुकी है। वास्तविकता तो 26 नवंबर 2008 के मुंबई आतंकी हमले तक गृह मंत्रालय और गृह मंत्रियों द्वारा माओवादी हिंसा पर चिंता तो जताई जाती रही।

सरकार की रणनीति के कारण इस क्षेत्र के माओवादियों के बारे में जो जानकारियां मिलती है। उनसे पता चलता है कि माओवादी चीन के माओवादियों द्वारा तैयार की गई सैन्य नीति जैसी ही नीति अपना रहे हैं। इसमें उनकी जिम्मेदारियों को ईलाके के मुताबिक विभाजित किया गया है। पूर्वी, पश्चिमी व उत्तरी बस्तर को मुख्य डिविजन बनाया गया है, जबकि दंतेवाड़ा ईलाके के दरमा, माढ़ डिविजन के प्रभारी अलग हैं। इनकी जिम्मेदारी जोनल कमेटियों को सौंपी गई है, जो दण्डकारण्य की स्पेशल जोन कमेटी के तहत काम करती है। इन कमेटियों के अधीन विशेष बल गठित किए गए हैं। उनमें दण्डकरनी आदिवासी संघ, पीपुल्स रिवोल्यूशनरी काउंसिल, नक्सल कंपनियां व प्लाटून, जन मिलीशिया, क्रांतिकारी बल एवं महिला संघ शामिल है। हर पांच छः गांवों को मिलाकर एक रेंज कमेटी बनाई गई है।

छत्तीसगढ़ नक्सली आंतक से प्रभावित होने वाले राज्यों की श्रेणी में सबसे उपर है। यहां 40,000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला बस्तर का जंगली ईलाका माओवादियों का गढ़ बना हुआ है। इसका क्षेत्रफल काश्मीर घाटी से दस गुना ज्यादा है। करीब 6000 वर्ग कि.मी. का अबुझमाड़ ईलाका (अज्ञात वन) तो पूरी तरह से माओवादियों के कब्जे में है। इसके 58% ईलाके में वन है, जहां बांस, साल, शीशम आदि पेड़ों की भरमार है।

पश्चिम बस्तर में आने वाले अबूझमाड़ की तुलना अंडमान व निकोबार से की जा सकती है, जहां के आदिवासी आज भी बाकी दुनिया से कटे हुए हैं। नारायणपुर जिले में स्थित यह ईलाका आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र और उडीसा की सीमाओं से मिलता है। ''अबुझमाड'' को ''मुक्त क्षेत्र'' घोषित कर चुके नक्सली आदिवासियों को यह कहकर अक्सर भड़काते हैं। इस क्षेत्र में माओवादियों का यह विस्तार होने में सन् 1970 में पारित उस सरकारी आदेश की भी रही, जिसके तहत यहां पर बाहरी लोगों के आने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। परिणामतः यह हिस्सा राज्य के बाकी हिस्सों से कट गया।

राजधानी रायपुर से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की दूरी :-

रायपुर और बस्तर	मध्य की दूरी	284 कि.मी.
रायपुर और कांकेर	--,,--	138 कि.मी.
रायपुर और अंबिकापुर (सरगुजा)	--,,--	300 कि.मी.
रायपुर और धमतरी	--,,--	77 कि.मी.
रायपुर और महासमुंद	--,,--	60 कि.मी.
रायपुर और दंतेवाड़ा	--,,--	369 कि.मी.
रायपुर और राजनांदगांव	--,,--	64 कि.मी.
रायपुर और जशपुर	--,,--	324 कि.मी.

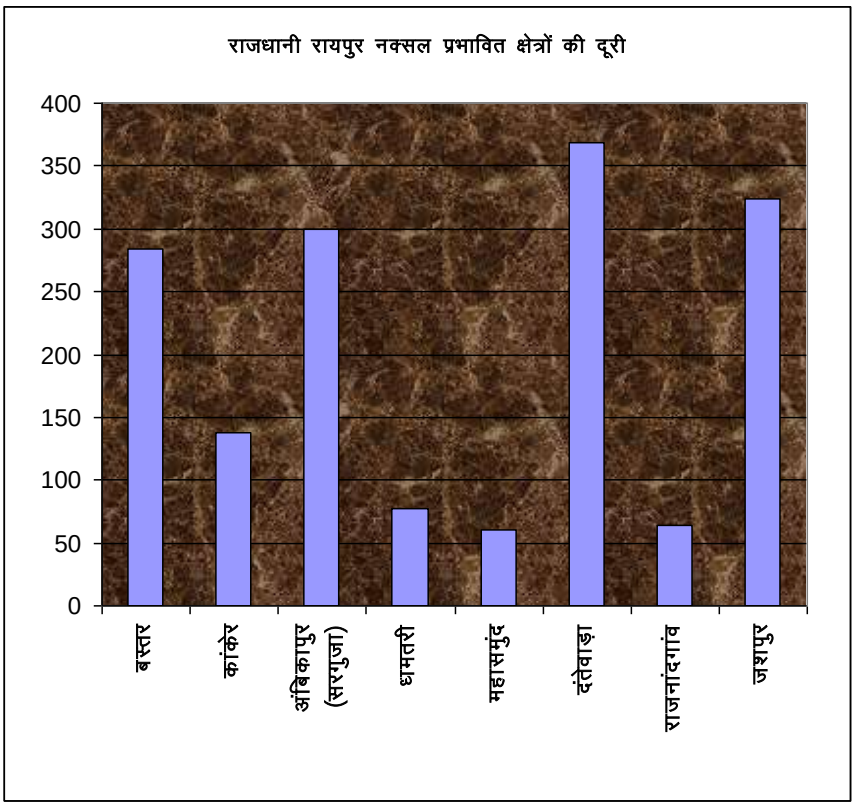

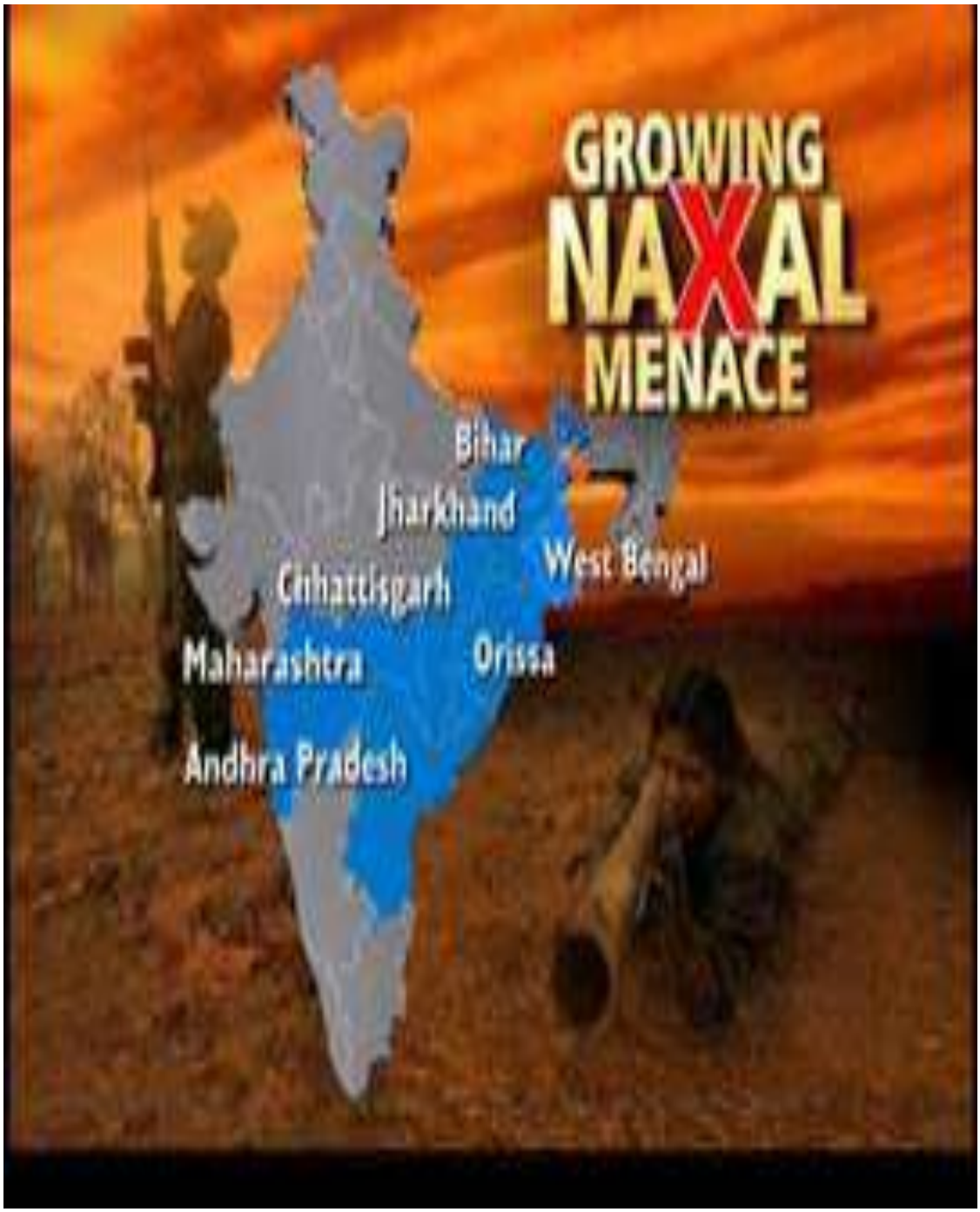
GROWING
NAXAL
MENACE
Bihar
Jharkhand
West Bengal
Chhattisgarh
Maharashtra
Orissa
Andhra Pradesh

रेड कॉरिडोर

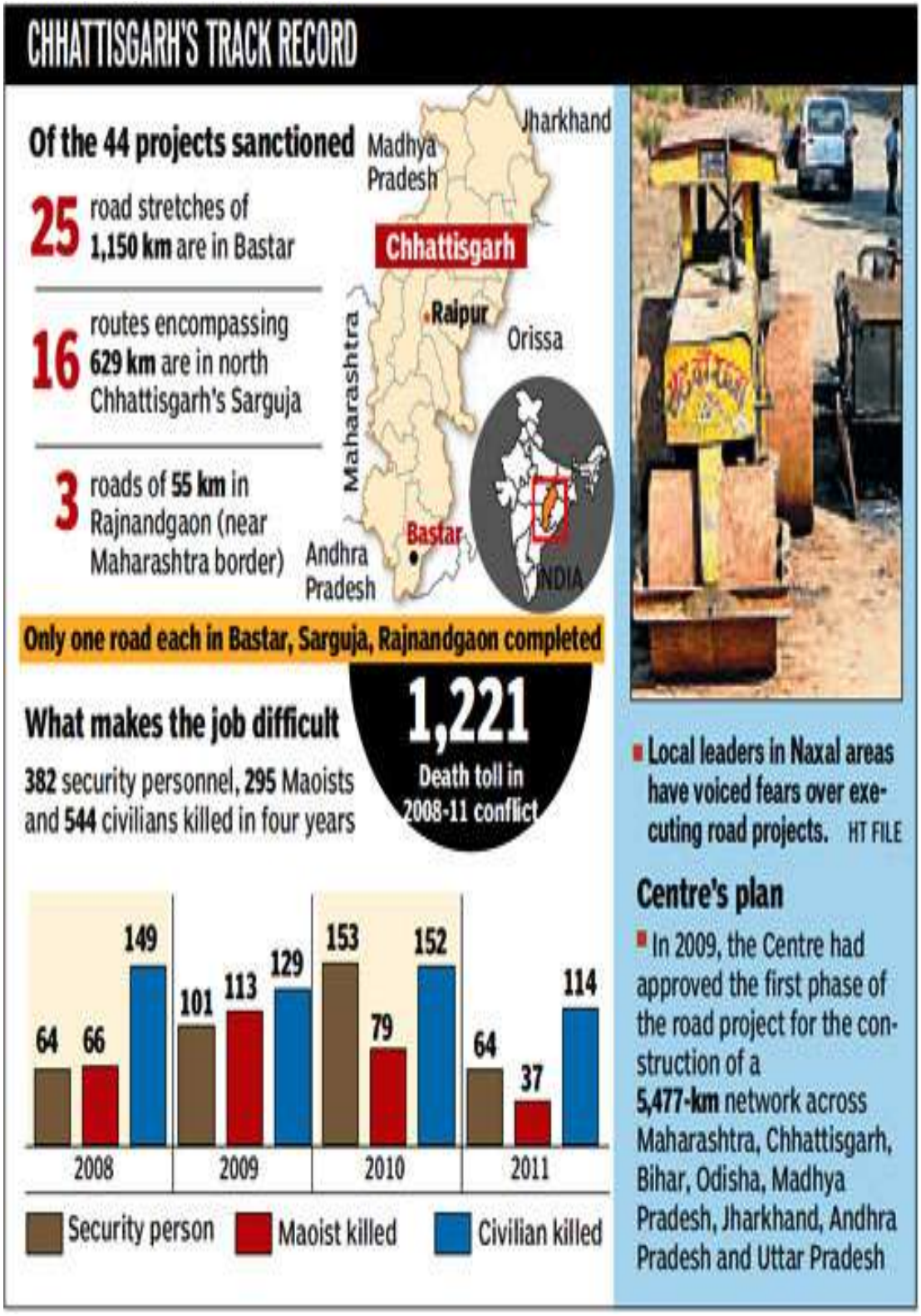

नक्सलवाद : तथ्यपरक आंकड़े

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तक/ग्रंथ :-

1. अधिकारी गौतम, कॉनफ्लिकट इन नागालैंड, चाणक्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. आनंद वी.के.कॉनफ्लिक्ट इन नागालैंड, चाणक्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1980
3. Banerajee, Sumanta. In the Wake of Naxalbari, A History of Naxalite Movement in India. Subarnarekha, Calcutta, 1980
4. Basu, Pradip. Towards Naxalbari (1953-1967) : An Account of Inner-Party Ideological Struggle, Progressive Publishers, Calcultta, 2000.
5. Bedeski, Robert. 1998. Human Security and Sun Tzu's Thought : An Alternative Approach to Peace Building. Paper Prepared for the 4th International Symposium on Sun Tzu's Art of War, Beijing, October 19-21.
6. भारती विश्व (अनुवादक) जंगलनामा ट्रेव्हल्स इन अ माओइस्ट गुरिल्ला जोन सतनाम पेंगुइन बुक्स, नॉएडा।
7. चक्रवर्ती सुदीप रेड सन ट्रेव्हल्स इन नक्सलाइट कंट्री, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली।
8. Chakrabarti, Sreemati. China and the Naxalites, Stosius Inc./Advent Books Division, 1990.
9. दास, डॉ. एस. नक्सलाइट्स एण्ड नक्सलिज़्म सुमीत इंटरप्राईजेसस, नई दिल्ली।
10. दफ देव (स्व) माओत्से तुंग ऑनवार द इंग्लिश बुक डिपो, देहरादून 1966
11. दास गुप्त विप्लव, नक्सलाइट मुवमेंट, मेक मिलन इंडिया प्राईवेट लिमिटेड
12. दास सत्यप्रकाश एण्ड स्वरूप सन्स, नक्सल मुवमेंट एण्ड स्टेट पावर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली 2006

13. गुप्त डॉ. परशुराम, गुरिल्ला युद्धकर्म प्रकाश बुक डिपा नई दिल्ली, 1983
14. हजारिका संजय, स्ट्रेंजर्स ऑफ द मिस्ट, पेंगुइनबुक्स नई दिल्ली जुलाई 1978
15. मोहंती मनोरंजन, पॉलिरिकल थिंकिंग ऑफ माओत्सेतुंग, द मैकमिलन इंडिया प्राईवेट लिमिटेड
16. पटवारी, डॉ.अरूण, भारतीय प्रतिरक्षा का विकास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली-2003
17. सिंह डॉ.ए.के., नक्सलवाद KW प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
18. तिवारी कनक, ''बस्तर'' लाल क्रांति बनाम ग्रीन हंट, प्रकाशक-मेघाबुक्स, दिल्ली, 2010
19. विभिन्न नक्सली साहित्य

शोध प्रपत्र -

1. शोध प्रकल्प - ISSN - 09716459, त्रैमासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका, 2010
2. तुणीर - ISSN 09742360 अंक 14 वर्ष 8, 15 अगस्त 2011
3. रक्षा अनुसंधान वर्ष 2 अंक 2, 2011, IS BM-978-81. 904574-5-3 4 रक्षा अध्ययन शोध समिति वार्षिक प्रकाशन, महाराजगंज (उ.प्र.)
4. सिद्धांत ISSNO 976-528 x , 2009 व 2010 त्रैमासिक राष्ट्रीय शोध जर्नल।
5. Scholars Voice - A new way of thinking ISSN 0974-6501, Centre for Defence Sciences, Research & Development, Allahabad-211011.
6. शोध प्रकल्प - ISSN - 09716459, त्रैमासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका, रायपुर (छ.ग.) 2010
7. शोध उपक्रम-ISSN - 09767894, छत्तीसगढ़ शोध संस्थान, रायपुर (छ.ग.)

पत्र पत्रिकाएं :-

1. छ.ग. आसपास, शेफाली मिडिया पब ग्रुप भिलाई अंक 23, 24
2. महानदी वार्ता, RNI No. CHHHIN/2007 123739 वर्ष 3 अंक 10, 2010

समाचार-प्रपत्र :-

1. सेन्ट्रल कॉनिकल, रायपुर (छ.ग.)
2. द हितवाद, रायपुर (छ.ग.)
3. हरिभूमि, रायपुर (छ.ग.)
4. हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्ली
5. नवभारत, रायपुर (छ.ग.)
6. नई दुनिया, रायपुर (छ.ग.)
7. टाईम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

websites : -

1. www.satp.org.
2. www.geocity.com
3. www.moist.com
4. www. Hindustansriram.com/ news/ 62440, 00160003 htm (has articles on history of naxalism, major naxlite outfits etc.)
5. www.cpiml.org(a good source of CPI-ML documents including liberation, the monthly magazine of the organization).
6. www.Hindustan srimas.com / news / 62440, 00160003 htm (has articles on history of naxalism, major naxalite outfits etc.)
7. www.moism org/ misc/ india/ cpimal/ cpiml-pw /30years/30-years.htm.

--00--